पंजीयन संख्या : 68939/98

ज्ञान तत्व

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

FEB 2025

अंक - 5

467

संघ परिवार आर्य समाज और सर्वोदय परिवार की समीक्षा 3

.....मेरा इन तीनों ही संस्थाओं से साथ जुड़कर कार्य करने का अवसर मिला मुझे 30 वर्ष पूर्व या महसूस हुआ कि यदि तीनों ही संस्थाओं के अच्छे लोग एकजुट होकर गांधी हिंदुत्व और समझदारी की दिशा में बढ़ने लगे तो सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है.....

नई समाज व्यवस्था 5

प्रयागराज कुंभ आयोजन 6

सिंहावलोकन

नई समाज व्यवस्था

5 अपराध नियंत्रण सरकार की एक प्रमुख जिम्मेदारी होगी और नई व्यवस्था में अपराध मुक्त समाज की कल्पना की जाएगी।

4 **पाठकों के प्रश्नों के उत्तर**

5 **कुछ महत्वपूर्ण समाचार**

8 **वैचारिक चर्चा**

9 **अरविन्द केजरीवाल**

10 **विश्वास और अंधविश्वास**

पत्र व्यवहार का पता

बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बाक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021

website : margdarshak.info

प्रकाशक, संपादक व स्वामी - बजरंगलाल

9617079344

mail : Support@margdarshak.info

संघ परिवार आर्य समाज और सर्वोदय परिवार की समीक्षा

पिछले डेढ़ सौ वर्षो में तीन महापुरुषों की सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका दिखती है और वह तीन है स्वामी दयानंद, हरिद्वार की और महात्मा गांधी तीनों की कार्य प्रणाली भिन्न-भिन्न रही है लेकिन तीनों का उद्देश्य लगभग समान था स्वामी दयानंद ने अपने जीवन काल में आर्य समाज शुरू किया जो धीरे-धीरे वर्तमान समय में गायत्री परिवार बाबा रामदेव तथा अन्य लोगों को मिलकर आर्य समाज परिवार के रूप में दिखाई देता है हरिद्वार जी ने भी संघ शुरुआत की थी जो वर्तमान समय में विश्व हिंदू परिषद तथा कुछ अन्य संस्थाओं को मिलाकर संघ परिवार के रूप में पहचाना जाता है गांधी ने भी सर्वोदय संस्थाओं की शुरुआत की थी जो बाद में सर्व सेवा संघ हरिजन सेवा संघ आचार्य कल आदि अनेक को मिलाकर सर्वोदय परिवार के रूप में स्थापित है तीनों की कार्य प्रणाली अलग-अलग होते हुए भी तीनों ही सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन में एक दूसरे के साथ मिलकर काम करते रहे स्वतंत्रता संघर्ष की मामले में इन तीनों के बीच लक्ष्य सामान था लेकिन मार्ग में भिन्नता थी आर्य समाज राष्ट्रीय स्वतंत्रता को अधिक महत्व देता था और गांधी परिवार इकाई का स्वतंत्रता को लेकिन संघ परिवार का हमेशा से यह मानना रहा कि अंग्रेजी की तुलना में मुसलमान अधिक खतरनाक है इसलिए हमेशा स्वतंत्रता संघर्ष में मुसलमान के साथ सतर्कता रखनी चाहिए इस बात गांधी सहमत नहीं थे इसके साथ-साथ गांधी पूरी तरह अहिंसक संघर्ष के पक्ष में थे तो आर्य समाज हिंसा और अहिंसा दोनों की स्वतंत्रता देता था संघ परिवार अहिंसक मार्ग के विरुद्ध था यही कारण है कि आर्य समाज का अहिंसक समूह भी गांधी के साथ खुलकर खड़ा रहा और हिंसा का पक्षधर समूह भी क्रांतिकारियों के साथ रहा सामाजिक सुधार के कार्यक्रमों में तीनों परिवारों की भूमिका लगभग समान थी तीनों ही छुआछूत जातिवादी या अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करना चाहते थे यद्यपि गांधी और आर्य समाज इन बुराइयों का खुलकर सामाजिक विरोध करते थे तो संघ परिवार अघोषित रूप से इन बुराइयों के विरुद्ध रहा स्वतंत्रता के बाद आर्य समाज ने अपने को पूरी तरह राजनीति से दूर कर लिया आर्य समाज ने यह मान लिया कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता का लक्ष्य और पूरा हो गया है और हमें सामाजिक बुराइयां दूर करने की तरफ बढ़ जाना चाहिए गांधी परिवार गांधी की मारते ही अपने मार्ग से भटक गया गांधी इकाई का स्वतंत्रता के रूप में ग्राम स्वराज चाहते थे लेकिन गांधी के मरने के बाद गांधीवादियों ने राजनेताओं के प्रभाव में आकर ग्राम स्वराज की नीति छोड़ दी और आदर्श ग्राम बनाने में लग गए नेहरू परिवार ने कुटिल राजनीति के माध्यम से विनोबा जी को धोखा दिया और अस्वस्थ किया कि अब हम ग्राम स्वराज लागू कर रहे हैं और अब गांधी परिवार समाज सुधार के कार्य में लग जाए विनोबा जी ने नेहरू की बात मानकर ग्राम स्वराज जी से किनारे हो गए और अपना झूला डंडा उठाकर भूदान या अन्य समाज सुधार के कार्यों में लग गए संघ परिवार स्वतंत्रता के पूर्व भी सांप्रदायिक मुसलमान से खतरा महसूस करता था लेकिन उसने स्वतंत्रता संघर्ष में कभी भी कोई बाधा पैदा नहीं की संघ परिवार मैं अपने को एक संस्कृति और सामाजिक संस्था तक सीमित कर लिया लेकिन स्वतंत्रता के बाद संघ परिवार बहुत तेजी से राजनीति में सक्रिय हो गया इस तरह गांधी परिवार आर्य समाज और संघ परिवार की दिशाएं अलग-अलग हो गई यदि उसे कालखंड की गहराई से विवेचना की जाए तो तीनों ही संस्थानों में बहुत ईमानदार और चरित्रवान लोगों का बहुमत था तीनों में ही आपको कहीं स्वार्थी या छल कपट करने वाले लोग 9 के बराबर दिखते थे लेकिन आर्य समाज के किनारे होने तथा गांधी के मरने के बाद साम्यवादी लोगों का सर्वोदय में हस्तक्षेप बढ़ाने से संघ परिवार और गांधीवादियों के बीच प्रत्यक्ष टकराव शुरू हो गया गांधी हत्या में संघ परिवार की किसी प्रकार की कोई भूमिका नहीं थी लेकिन संघ परिवार के कुछ लोगों की गांधी हत्यारा प्रति कुछ सहानुभूति थी इसका लाभ बहुत तेजी से कम्युनिस्टों ने उठाया और सर्वोदय परिवार को संघ परिवार से पूरी तरह अलग-अलग कर देने में सफलता प्राप्त कर ली आर्य समाज और संघ परिवार के बीच बिल्कुल अलग कार्य प्रणाली थी संघ परिवार भावना प्रधान शरीफ हिंदुत्व की दिशा में उत्साहित करता था तो आर्य समाज शराफत की जगह तर्कसंगत समझदारी की दिशा में समाज को ले जाना चाहता था साम्यवाद नेहरू परिवार और सांप्रदायिक मुसलमान मिलकर हिंदुत्व को नास्तिकता का पाठ पढ़ा रहे थे और इन तीनों ने गांधी परिवार को इसका सफल माध्यम बनाया कालांतर में धीरे-धीरे आर्य समाज भी विचार मंथन को छोड़कर भावनाओं की दिशा में बढ़ने लगा तो देश के हिंदुओं को यह महसूस हुआ कि यदि हमें भावना प्रधान ही रहना है तो हम संघ के साथ ही क्यों ना रहे परिणाम हुआ कि आर्य समाज धीरे-धीरे कमजोर होता चला गया फिर एक बात और थी संघ एक संगठन था उसमें अनुशासन था आर्य समाज एक संस्था थी और अनुशासन के अभाव में आर्य समाज में आपसी संघर्ष भी बढ़ते गए राजनीतिक सत्ता पर नेहरू परिवार का लंबे समय तक दबाव रहा इसलिए सर्वोदय मैं कम्युनिस्टों के अतिरिक्त अन्य लोगों का प्रवेश लगभग बंद हो गया यहां तक की गांधी जीवन भर अहिंसा के समर्थक रहे गांधी के मरने के बाद भी ठाकुरदास बंद सिद्धराज दादा आदि अनेक लोग अहिंसा का ही झंडा उठाए हुए थे इन लोगों ने जरूरत पड़ने पर नेहरू समर्थक विनोबा भावे का साथ छोड़कर जयप्रकाश का साथ दिया लेकिन धीरे-धीरे योजना बाद तरीके से कम्युनिस्टों ने इन लोगों की करने की प्रतीक्षा की और गांधीवादी अहिंसा की जगह नक्सलवादी हिंसा का समर्थन करने लगे जहां गांधी वैचारिक हिंदुत्व के पक्षधर थे वही गांधीवादी सिर्फ कड़ी और गांधी टोपी तक सीमित होकर हिंदुत्व विरोधी होने की पहचान तक नीचे गिर गए लेकिन इस मामले में संघ परिवार सावधान रहा संघ परिवार ने धीरे-धीरे अच्छा से वीडियो को भी खत्म कर दिया और सावरकर वीडियो से भी मुक्त हो गया परिणाम यह हुआ कि जहां गांधीवादी या तो लगभग समाप्त हो गए अथवा गिनती के कुछ लोग बचे हैं और जो बच्चे हैं वह भी कहीं ना कहीं सत्ता और संपत्ति की लड़ाई के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं कर रहे हैं आर्य समाज और संघ परिवार अपना अपना अलग अस्तित्व रखते हुए भी लगभग मिलकर काम कर रहे हैं स्पष्ट है कि भारत नेहरू परिवार के बाद अब सीधा दो दिशाओं में एकजुट हो रहा है एक दिशा है साम्यवादी तानाशाही सांप्रदायिक इस्लाम और नेहरू परिवार का घाट जोड़ तो दूसरी दिशा है हिंदुत्व गांधीवादी विचारधारा और संघ परिवार की शराफत प्रधान सामाजिक व्यवस्था मेरा इन तीनों ही संस्थाओं से साथ जुड़कर कार्य करने का अवसर मिला मुझे 30 वर्ष पूर्व या महसूस हुआ कि यदि तीनों ही संस्थाओं के अच्छे लोग एकजुट होकर गांधी हिंदुत्व और समझदारी की दिशा में बढ़ने लगे तो सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है आर्य समाज मेरी बात से सहमत हुआ गांधीवादी धीरे-धीरे मुझे अपना शत्रु समझने लगे और संघ परिवार मेरी बात ध्यान से सुनता था लेकिन मानता नहीं था जब से आर्य समाज और संघ परिवार में निकटता पड़ी है संघ परिवार गुड सेवादियों से भी अलग हुआ है तथा गांधीवादी अस्तित्व ही हुए हैं तब मुझे यह उम्मीद बन गई कि अब नरेंद्र मोदी मोहन भागवत मिलकर देश को उसे दिशा में ले जा रहे हैं जिस दिशा में मैं सोचता था वह दिशा थी कि सभी संस्थाओं के अच्छे लोग एक साथ जुड़े और साम्यवादी तानाशाही मुस्लिम सांप्रदायिकता तथा राजनीतिक परिवारवाद से मुक्त गांधी मार्ग हिंदुत्व समझदारी को मजबूत किया जाए वह प्रश्न अब सफल होते दिख रहा है मैं अस्वस्थ हूं कि गांधी की आत्मा हरिद्वार जी का संगठन और दयानंद जी को सामाजिक क्रांति एक साथ मिलकर हमारे समाज व्यवस्था को ठीक दिशा में बढ़ाने में सफल हो सकेंगे।

बजरंग मुनि

प्रधान संपादक

प्रश्न उत्तर-

1 प्रश्न- गुणात्मक हिन्दुत्व और सनातन हिन्दुत्व मे क्या फर्क है?

उत्तर- गुणात्मक हिन्दुत्व और सनातन हिन्दुत्व का आशय एक ही है किन्तु गुणात्मक हिन्दुत्व और संगठनात्मक हिन्दुत्व अलग अलग होते हैं। दुनिया मे हिन्दू एक मात्र समूह है जो मूलतः किसी भी रूप मे संगठन पर विश्वास नही करता। दूसरी ओर इस्लाम अकेला समूह है जो सिर्फ संगठन पर ही विश्वास करता है। गांधी, आर्य समाज, गायत्री परिवार आदि की सोच धार्मिक कही जा सकती है। इनकी धर्म की व्याख्या गुण प्रधान है। संघ परिवार इस्लाम साम्यवाद की सोच संगठनात्मक है, धार्मिक नहीं। इनकी व्याख्या पहचान प्रधान होती है। गांधी, आर्य समाज, गायत्री परिवार आदि हिन्दुत्व की पहचान जीवन पद्धति से मानते हैं जिसमे सहजीवन, सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम का भाव महत्वपूर्ण रहता है; अहिंसा और सत्य को महत्वपूर्ण माना जाता है; दूसरी ओर संगठनात्मक हिन्दुत्व मे चोटी, धोती, गाय, गंगा, मंदिर को अन्य गुणों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। गुणात्मक हिन्दुत्व का नेतृत्व ब्राम्हण प्रवृत्ति प्रधान विचारको के हाथ मे होता है तो संगठनात्मक हिन्दुत्व का नेतृत्वक्षत्रिय प्रवृत्ति प्रधान राजनेताओ के हाथ मे। गुणात्मक हिन्दुत्व संख्या विस्तार को महत्वहीन मानता है, तो संगठनात्मक हिन्दुत्व संख्या विस्तार को पहली प्राथमिकता मानता है।

लेकिन पिछले 8-10 वर्षों में संघ की विचारधारा में बहुत अंतर आया है। पहले के वर्षों में संघ पर सावरकरवादियों का प्रभाव ज्यादा था इसलिए उनमें कट्टरता अधिक दिखती थी। वर्तमान समय में संघ में सावरकरवादियों का प्रभाव बहुत कम हो गया है अब तो मोहन भागवत के बाद यह बात साफ दिखने लगी है कि संघ गांधी के विचारों को लेकर आगे बढ़ रहा है।

2 प्रश्न- आजादी के बाद संघ का राजनीति में सक्रिय होने का उद्देश्य मुसलमान को रोकना मात्र था या कुछ और?

उत्तर- संस्था हमेशा समाज के साथ जुड़कर रहना चाहती है और संगठन हमेशा सत्ता के साथ जुड़कर। संघ एक संगठन है संस्था नहीं। संघ आंशिक रूप से उग्रवादी विचारों का रहा है, परंतु आतंकवादी क्रिया से कभी नहीं जुड़ा। लेकिन यह बात भी सच है कि उग्रवादी विचारों से ही आतंकवाद पैदा होता है। भारत में यदि किसी संगठन ने आतंकवाद को नहीं रोका तो वह आतंकवाद उग्रवाद का काल बन जाता है। ऐसा ही साम्यवाद के साथ भी हुआ है और इस्लाम के साथ भी हो रहा है किंतु संघ इस मामले में सावधान रहा। ज्यों ही संघ में शामिल सावरकरवादियों ने कुछ अति उग्रवादी दिशा पकड़ी तो संघ ने उन पर नियंत्रण लगाया। अब संघ हिंदू महासभा से भी मुक्त हो रहा है। वर्तमान में संघ बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका प्रमुख कारण है गांधीवादियों पर समाज का अविश्वास, साम्यवाद का पतन और इस्लाम का अधिक से अधिक संघ विरोध। यदि भारत में विपक्ष इतना मुखर होकर इस्लाम का समर्थन और हिंदुत्व का विरोध नहीं करता तो संघ के बढ़ने की गति इतनी तेज नहीं होती।

1 प्रश्न- यदि नरेंद्र मोदी चुनाव के पूर्व संघ परिवार को नाराज कर दे तो चुनाव पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर- संघ तो कभी भी मोदी जी से नाराज हो गया होता लेकिन विपक्ष इन दोनों के बीच एकता मजबूत करने का प्रयत्न करता रहता है। वर्तमान 2024 के चुनाव में भी ऐसी शुरुआत हुई थी और उसका लाभ भी विपक्ष को मिला लेकिन थोड़ी सी ताकत मिलते ही विपक्ष ने जिस तरह संघ को गालियां देना देनी शुरू कर दी उस व्यवहार से संघ और मोदी के बीच तत्काल और मजबूत गठबंधन बन गया। वर्तमान भारत में जब तक वर्तमान विपक्ष समाप्त नहीं हो जाता तब तक किसी नए विपक्ष की उम्मीद करना व्यर्थ है।

प्रश्न- संघ परिवार की सबसे बड़ी कमी है कि भारत की तीन जातियों को छोड़कर लगभग 95 प्रतिषत लोगो को संघ यह विश्वास कभी नही दिला पाया कि यह संगठन आपका है। आप कही भी सर्वे कर ले तो आपको यह सच्चाई मिल जाएगी।

उत्तर- मेरे विचार में संघ एक धार्मिक और राजनीतिक लोगों का मिला-जुला संगठन है किंतु किसी भी रूप में जातिवादी नहीं है। संघ हिंदू परिवार की जातियों के टकराव के विरुद्ध है। यह अलग बात है कि वह हिन्दू समाज के अंदर व्याप्त ऊँच-नीच, छूआ-छूत गरीब अमीर के भेद-भाव दूर करने जैसे सामाजिक कार्य को कम महत्व देकर इस्लाम से टकराव को अधिक महत्व देता है। इस्लाम और साम्यवाद हिन्दू धर्म के अंतर्गत भेद-भाव, ऊँच-नीच को अधिक हाइलाइट करके इसे मुख्य मुददा बनाते है। भाजपा को छोडकर अन्य राजनैजिक दलो को यह अंदर तक विश्वास हो गया कि हिन्दू कभी संगठित नही हो सकता जबकि मुसलमान तो जन्म से मृत्यु तक संगठित ही रहता है। यही कारण है कि सभी राजनैतिक दलो ने मुसलमानो और साम्यवादियो को इतना सिर पर चढ़ा लिया कि आज संघ परिवार के समर्थन से मोदी सरकार चल रही है। यह सही है कि लगभग 50-60 वर्षों तक कभी भी संघ को हिंदुओं का व्यापक समर्थन नहीं मिला किंतु यह भी सही है की साम्यवादियों और सांप्रदायिक मुसलमानों से अपनी सुरक्षा के लिए मजबूर होकर संघ के साथ जुड़ना पड़ा और आज तो कुछ मुट्ठी भर नास्तिकों को छोड़कर पूरा का पूरा हिंदू समाज संघ के साथ जुड़ गया है।

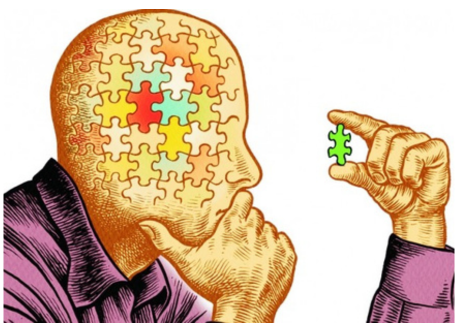

4) सोनू देवरानी उत्तराखंड-

प्रश्न- संघ परिवार आर्य समाज और सर्वोदय परिवार हमेशा समाजशक्तिकरण में लगे रहे। क्या भविष्य में तीनों एक साथ हो सकते हैं? आप यह भी बताने का कष्ट करें कि संघ परिवार लगातार मजबूत हो रहा है जबकि आर्य समाज और सर्वोदय समाज कमजोर।

उत्तर- शरीफ लोग कभी स्वयं संचालित नहीं होते शराफत के ही कंधे पर चढ़कर धूर्तता आगे बढ़ती है। यह तीनों ही शरीफ प्रवृत्ति के हैं जिसके परिणाम स्वरूप तीनों ही कुछ चालाक लोगों के हाथ में खेलते रहे। संघ ने तो स्वयं ही राजनीति के साथ गठजोड़ कर लिया लेकिन आर्य समाज और सर्वोदय परिवार इस प्रकार के चालाक लोगों से बाहर नहीं निकल सका। आर्य समाज को स्वामी अग्निवेश सरीखे साम्यवादियों ने बहुत नुकसान पहुंचाया। दूसरी ओर सर्वोदय परिवार भी पूरी तरह साम्यवाद और इस्लामी कट्टरवाद के चंगुल में अंदर तक फंसा हुआ है। फिर भी धीरे-धीरे आर्य समाज और संघ एक साथ जुड़ गए हैं और सर्वोदय परिवार साम्यवादियों और नेहरू परिवार के साथ जुड़ गया है। संघ परिवार गांधी की नीतियों को लेकर आगे बढ़ रहा है और सर्वोदय नेहरू की नीतियों को।

आर्य समाज निरंतर वैचारिक हिंदुत्व का पक्षधर रहा। आर्य समाज शराफत को समझदारी की दिशा में बढ़ाना चाहता था लेकिन बाद के कालखंड में आर्य समाज ने हिंदुओं की भावनाओं में वैचारिक बदलाव लाने की अपेक्षा उनकी भावनाओं पर लगातार चोट करने का प्रयास किया। आर्य समाज का उद्देश्य आस्था को अनास्था में बदलना नहीं था लेकिन हिंदू समाज को ऐसा महसूस हुआ कि आर्य समाज आवश्यकता से अधिक मूर्ति पूजा का विरोध कर रहा है। मूर्ति पूजा को एक निरर्थक प्रयास तो कहा जा सकता है किंतु कोई गलत कार्य नहीं। आर्य समाज ने मूर्ति पूजा को गलत सिद्ध करने की कोशिश की परिणाम हुआ कि आर्य समाज धीरे-धीरे आस्थावान हिंदुओं से दूर होता चला गया।

प्रश्न- आप कैसे कह सकते है कि संघ अंग्रेजी शासन के पक्ष मे था? संघ तो लगातार अखंड भारत का पक्षधर रहा है।

उत्तर - स्वामी दयानंद और विवेकानंद लगभग समकालीन रहे होगे। स्वामी दयानंद ने अंग्रेजी शासन का आंशिक विरोध करते हुए स्वराज्य की बात कही किन्तु स्वामी विवेकानंद ने नहीं कही। स्वामी दयानंद के शिष्यों ने समाज सुधार का तथा मुस्लिम विरोध का काम रोककर स्वतंत्रता संघर्ष मे भाग लिया। किन्तु संघ परिवार ने स्वतंत्रता संघर्ष से दूरी बनाकर इसके ठीक विपरीत हिन्दु मुसलमान मे टकराव बढ़ाने का ही काम किया। आज तक 77 वर्ष बीतने के बाद भी संघ के लोग स्वतंत्रता को उतना महत्व नही देते जितना विभाजन को गाली देते है। संघ परिवार विभाजन की कीमत पर स्वतंत्रता का पक्षधर कभी नही रहा बल्कि यदि गृह युद्ध होता तो संघ परिवार उसमे भी सहमत हो जाता और गृह युद्ध के माध्यम से अंग्रेजो की इच्छा पूरी कर देता। अर्थात स्वतंत्रता और कुछ वर्षो के लिये टल जाती।

संघ परिवार हमेशा अखंड भारत की बात करता है, लेकिन यदि गंभीरता से भारत,पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, नेपाल और श्रीलंका को एक साथ जोड़ने की कोई योजना बन जाए तो संघ परिवार उस योजना का समर्थन नहीं करेगा क्योंकि वर्तमान भारत में जिस तरह 15% मुस्लिम आबादी ने सांप्रदायिक आधार पर एकजुट होकर इतनी समस्याएं पैदा कर रखी हैं ऐसे समय में देश की पूरी आबादी में मुसलमान का प्रतिशत 25-30 भी हो सकता है। जो अधिक बड़ी समस्या बनेगा इसलिए संघ का अखंड भारत का स्वप्न वास्तविक सोच नहीं है।

मुनि जी के विचार

नयी समाज व्यवस्था

हम लोग नई समाज व्यवस्था में इस बात की गारंटी देना चाहते हैं कि कोई भी अपराधी दंड से बच न सके। किसी अपराधी का न्यायालय से निर्दोष सिद्ध होना भी सामाजिक अपराध माना जाना चाहिए। वर्तमान भारत में न्याय की ऐसी गलत परिभाषा बन गई है कि अपराधी न्यायालय से निर्दोष छूट जा रहे हैं। यही कारण है कि अपराध बढ़ रहे हैं। हम तो इस मत के हैं कि अपराध नियंत्रण की गारंटी तंत्र की होगी। कोई अपराधी तंत्र के दंड से बच नहीं सकेगा। यदि आवश्यकता होगी तो खुली फांसी दी जाएगी और यदि उससे भी अधिक कठोर दंड देना आवश्यक समझा गया तो वह भी दिया जाएगा लेकिन अपराधियों के मन में कानून का भय हमेशा बना रहना चाहिए। यदि जरूरत पड़ेगी तो गुप्त मुकदमा प्रणाली भी शुरू की जाएगी लेकिन अपराधियों को किसी भी रूप में बचने नहीं नहीं दिया जाएगा। अपराध नियंत्रण के लिए साम्यवाद और इस्लामी कानून का भी अध्ययन किया जाएगा। न्यायिक प्रक्रिया में भी बदलाव किया जाएगा। हम पश्चिम की न्यायिक प्रक्रिया को संशोधित करेंगे। स्पष्ट है कि अपराध नियंत्रण सरकार की एक प्रमुख जिम्मेदारी होगी और नई व्यवस्था में अपराध मुक्त समाज की कल्पना की जाएगी।

हम नई समाज व्यवस्था में इस बात की स्वतंत्रता देंगे कि चुनाव में कोई कितना भी धन खर्च कर सकता है। चुनाव में पैसे बांटना कोई अपराध नहीं होगा क्योंकि किसी को भी धन देना किसी भी प्रकार से अपराध नहीं हो सकता। कोई व्यक्ति अपना कीमती सामान किसी भी दूसरे को बेच सकता है और कोई खरीद सकता है इसमें खरीद बिक्री अपराध कैसे हो गई। यदि किसी व्यक्ति ने अपना वोट पैसे लेकर दिया तो इसमें कोई अपराध नहीं होता है। मेरे पास जो वोट है वह मेरा है किसी दूसरे की अमानत नहीं है इसलिए चुनाव में किसी भी प्रकार से धन के लेनदेन पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए। इसी तरह चुनाव में उम्मीदवारों की जमानत राशि भी बहुत बढा देनी चाहिए। जिस व्यक्ति की जमानत जप्त हो जाती है उसका पूरा पैसा जप्त हो जाना चाहिए और वह राशि इतनी अधिक होनी चाहिए कि सिर्फ गंभीर लोग ही चुनाव लड़ सकें। आलतू फालतू लोग यदि चुनाव लड़ते हैं तो जमानत राशि बढ़ाकर ऐसे लोगों को निरुत्साहित करने की जरूरत है। चुनाव पर सरकार का खर्च कम करने की आवश्यकता है।

नई समाज व्यवस्था में सरकारी कर्मचारी को सरकार कभी भी नौकरी से हटा सकती है, उसका वेतन कम कर सकती है इसमें न्यायालय कोई दखल नहीं दे सकता। एक सिद्ध सिद्धांत है कि नियुक्ति करने वाला नियुक्त को हटाने या नियंत्रित करने का पूरा अधिकार रखता है। यदि मालिक और नौकर के बीच कोई अनुबंध है और उस अनुबंध का कोई उल्लंघन करता है तब वह न्यायालय जा सकता है अन्यथा नहीं। अनुबंध महत्वपूर्ण होगा। इस तरह ना तो सरकारी कर्मचारी कोई आंदोलन कर सकेंगे न हड़ताल और चक्का जाम कर सकेंगे। कर्मचारी और सरकार के बीच जो अनुबंध होगा उस अनुबंध को मानने के लिए दोनों बाध्य होंगे। इस नई व्यवस्था से अनेक मामले पैदा ही नहीं होंगे विवाद होंगे ही नहीं क्योंकि रोजगार प्राप्त करना व्यक्ति का मौलिक अधिकार नहीं होगा राज्य का संवैधानिक कर्तव्य हो सकता है। जब मौलिक अधिकार नहीं रहेगा तब न्यायालय इस मामले में दखल नहीं दे सकेगा।

हम सरकार द्वारा मीडिया को प्रचार करने के लिए दिए गए किसी भी प्रकार के धन पर पूरा प्रतिबंध लगा देंगे। सरकार न तो किसी अखबार को धन दे सकेगी न ही किसी अन्य प्रचार तंत्र को। सरकार का काम अपनी उपलब्धियों का प्रचार करना नहीं है। सरकार समाज को सूचना दे सकती है। सूचना और प्रचार में बहुत अंतर होता है। वर्तमान समय में आम जनता से बलपूर्वक पैसा ले लेकर सरकार मीडिया पर खर्च करती है यह पूरी तरह अनुचित है । इस तरह का सारा खर्च रोका जाना चाहिए। क्योंकि इस प्रकार के प्रचार करने से समाज के अंदर गलत संदेश भी जाता है ,सच छुप जाता है असत्य मजबूत हो जाता है और साथ में जनता को टैक्स भी देना पड़ता है। आम जनता को इससे दोहरी चोट लगती है और सरकारों को इससे अपना खेल खेलने का अवसर मिल जाता है। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि सरकार द्वारा प्रचार के लिए किया गया सारा का सारा खर्च रोक देना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को सम्मानित भी करना है तो सम्मान देना सरकार का काम नहीं है वह हमारी राष्ट्र सभा कर लेगी।

नई समाज व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म पालन की पूरी स्वतंत्रता होगी। धर्म के दो प्रकार होते हैं गुण प्रधान और पहचान प्रधान। गुण प्रधान धर्म को सरकार प्रोत्साहित करेगी और पहचान प्रधान धर्म को स्वतंत्रता देगी। इस तरह कोई भी व्यक्ति किसी भी उपासना पद्धति को स्वीकार कर सकता है, किसी भी प्रकार की जीवन पद्धति से जी सकता है। व्यक्ति के व्यक्तिगत आचरण में सरकार तब तक कोई दखल नहीं देगी जब तक उसका व्यक्तिगत आचरण किसी दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक न हो। इस तरह पूरे समाज में धर्म की स्वतंत्रता होगी। किसी भी इकाई को अपनी इकाई की सीमा के अंतर्गत किसी भी प्रकार का आचरण करने की स्वतंत्रता तब तक होगी जब तक उसका आचरण किसी अन्य इकाई को प्रभावित न करें। नई राजनीतिक व्यवस्था में संसद में प्रत्येक व्यक्ति को अपना पक्ष रखने और मतदान करने की स्वतंत्रता होगी। पक्ष और विपक्ष जैसी कोई स्थिति नहीं होगी। सभी व्यक्ति स्वतंत्र होंगे संसद सदस्य जनप्रतिनिधि माना जाएगा। संसद के बाहर उसकी भूमिका किसी भी दल के साथ हो सकती है लेकिन संसद में कोई दल नहीं होगा। वर्तमान समय में सबसे बड़ी समस्या यह दलगत राजनीति ही है और इस दलगत राजनीति को अब संसद में भी शामिल कर लिया गया है। जब संविधान प्रारंभ में बना था तो संसद में दलों को मान्यता नहीं थी लेकिन बाद में इन लोगों ने संसद में भी पक्ष विपक्ष बना दिया। मेरे विचार से वर्तमान समय में जो प्रतिदिन नाटकबाजी देखने को मिल रही है वह इसी दलगत राजनीति का नतीजा है। अभी आप चाहे दिल्ली में देखें या अन्य कहीं भी संसद सदस्य भेड़ बकरी के समान अस्तित्वहीन है उन्हें न बोलने की स्वतंत्रता है ना विचार रखने की स्वतंत्रता है उन्हें तो सिर्फ अपनी पार्टी के अनुशासन में बंध कर रहना पड़ता है। इसलिए नई व्यवस्था में दल विहीन लोकतंत्र होगा निर्दलीय लोकतंत्र होगा जन प्रतिनिधित्व होगा दल प्रतिनिधित्व नहीं।

कुछ महत्वपूर्ण समाचार

1 दिल्ली स्टेशन पर एक भगदड़ में 18 लोग मर गए हैं और कुछ घायल भी है। इसमें मेरे विचार से एक ही गलती है कि सरकार ने रेल यात्रा को इतना सस्ता कर दिया है की लगातार ट्रेनों में भीड़ बढ़ रही है। यदि आप किसी भी वस्तु को औसत से अधिक सस्ता कर देंगे तो उसमें इस प्रकार की भगदड़ स्वाभाविक है और यदि बहुत सस्ता कर देंगे तो उस भगदड़ में लोग मरेंगे ही। मैं लंबे समय से लिखता रहा हूं की आवागमन को महंगा किया जाए ट्रेनों का किराया भी बढ़ाया जाए ट्रेनों को अधिक से अधिक क्षेत्र में चलाया जाए लेकिन यात्रा सस्ती ना हो। अन्य वस्तुओं पर टैक्स लगाकर आप यदि आवागमन को सस्ता करते हैं तो यह अच्छी बात नहीं है। उसी का दुष्परिणाम है कि आज ट्रेनों में इतनी भीड़ बढ़ रही है सड़कों पर इतनी ज्यादा एक्सीडेंट हो रहे हैं। इन सब का मुख्य कारण है आवागमन का सस्ता होना। मैं सरकार से निवेदन करता हूं कि सरकार आवागमन को महंगा करें जिससे आवागमन कुछ कम हो और लोग जरूरत के हिसाब यात्रा करें।

5

2 दुनिया के अनेक मुस्लिम देशों के राष्ट्रीय अध्यक्ष भारत आते हैं तो उनमें से अनेक राष्ट्र अध्यक्ष भारत के साथ अच्छे संबंध रखना चाहते हैं लेकिन भारत के मुसलमान को इस बात से बहुत कष्ट होता है कि पाकिस्तान को छोड़कर अन्य देशों के मुसलमान भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ क्यों अच्छे संबंध बनाते हैं। भारत के मुसलमान के दिमाग में सिर्फ पाकिस्तान घुसा हुआ है। मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया कि भारतीय मुसलमान विपक्षी दलों के दबाव में है अथवा भारतीय मुसलमान के दबाव में विपक्षी दल है। कोई ना कोई अवश्य दबाव में है। यही कारण है की ना भारत का कोई विपक्षी राजनीतिक दल जरा भी मुसलमान की समालोचना कर सकता है और ना ही मुसलमान में इतनी ताकत है कि वह किसी विपक्षी दल की समीक्षा कर सके। भारत के आम नागरिकों को इस गठ जोड़ पर अवश्य ही विचार करना चाहिए क्योंकि यदि यह सिर्फ इस्लाम की समस्या होती तो विदेश के आए हुए मुसलमान भारत या अमेरिका के बारे में कुछ अलग राय नहीं रखते। मैं फिर कहूंगा कि भारत के मुसलमान को इस संबंध में स्वतंत्रता से सोचना चाहिए और विपक्षी दलों को भी धर्मनिरपेक्षता के आधार पर स्वतंत्र चिंतन करना चाहिए। इन दोनों का गठ जोड़ दोनों को ले डूबेगा यह बात साफ दिखने लगी है।

प्रयागराज कुंभ का आयोजन

भारत की हिंदू जनता ने कुंभ का सफल आयोजन करके उन लोगों को जवाब दे दिया है जो हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक मानते थे। इस मामले में मुसलमान तो चुप रहे लेकिन अखिलेश यादव कम्युनिस्ट और कांग्रेसी यह तीनों बहुत अधिक सक्रिय रहे। इन तीनों के लगातार विरोध के बाद भी देश की जनता ने अपनी आस्था सिद्ध की। कुंभ का आयोजन बहुत सफल रहा मैं स्वयं तो इलाहाबाद नहीं गया लेकिन हमारे परिवार के अधिकांश लोग इलाहाबाद गए और आकर व्यवस्था की प्रशंसा की। लोगों को कई कई किलोमीटर चलना पड़ा जाम में फंसे खाने पीने की कठिनाई हुई महंगा आवागमन हुआ इसके बाद भी लोगों का आना बढ़ता ही गया। विरोधी छाती पीटते रहे देश की जनता आती रही। मुझे तो ऐसा महसूस हुआ कि यदि कम्युनिस्ट इतने दिन भर छाती नहीं पिटते तो शायद आयोजन इतना सफल नहीं होता। कल मैं वाराणसी में था और वाराणसी से ही मैं कुंभ के आयोजन की अच्छी व्यवस्था का आकलन किया। मैंने यह महसूस किया की कुंभ का आयोजन सरकार की भी सफलता है और भारत के हिंदुओं की भी सफलता। विशेष करके सफलता का प्रश्न नहीं है उन लोगों की असफलता है जो हिंदुओं का लगातार विरोध करते रहते हैं। कम्युनिस्ट की तो जवान बंद हो गई है। कुंभ ने उनकी जबान पर ऐसा पानी फेर दिया है कि कोई कम्युनिस्ट अब सामने दिख ही नहीं रहा है। अच्छा हो कि हिंदी हिंदू हिंदुस्तान विरोधियों से हमारा पिंड छूट जाए।

वैसे तो पिछले कुछ वर्षों से लगातार हिंदू समाज में एक बदलाव दिख रहा था लेकिन कुंभ के सफल आयोजन ने उस बदलाव को दुनिया के सामने प्रमाणित कर दिया है। हिंदुओं में धर्म के प्रति आस्था लगातार बढ़ती हुई दिख रही है। मंदिरों में बढ़ती हुई भीड़ धर्म गुरुओं की कथाओं में उमड़ती हुई जनसंख्या और कुंभ मेले में जन सैलाब ने सिद्ध कर दिया है की हिंदुओं में धर्म के प्रति बहुत गहरी आस्था है। प्रश्न उठता है कि यह आस्था का फैलाव है अथवा आस्था का प्रदर्शन। मैंने एक मित्र से पूछा उसने बताया कि हिंदू धर्म के प्रति आस्था तो पहले भी थी लेकिन पहले उस आस्था का प्रकटी करण नहीं था क्योंकि हिंदू हीनभावना से ग्रस्त कर दिया गया था। कोई व्यक्ति मंदिर जाता था तो वह दूसरों को यह नहीं बता पाता था कि वह मंदिर गया था क्योंकि उसे दकियानूसी परंपरा विरोधी अंधभक्त बता दिया गया था। अन्य तथा कथित नास्तिक लोग उसके मन में हिंदू विरोधी ऐसा भाव भर दिए थे कि हिंदू एक पिछड़ा हुआ मूर्ख बुद्धिहीन व्यक्ति है और इस हीन भावना के कारण वह अपनी बात को रख नहीं पाता था। अब जब से हिंदुओं में बराबरी का भाव आया है जब से नास्तिकों का पतन शुरू हुआ है तब से हिंदुओं ने अपनी हीन भावना छोड़ दी है और अब वह अपनी आस्था को मान्यता के साथ-साथ प्रदर्शित भी कर रहा है। यही कारण है कि आज हिंदू विरोधी हीन भावना से ग्रस्त हो गए हैं राहुल अखिलेश ममता लालू सरीखे लोग अब मुंह छुपा कर बैठे हुए हैं। विरोधियों में हीन भावना अब घर कर गई है। यही कारण है कि आज वह एक तरफ तो आस्था पर चोट भी कर रहे हैं दूसरी ओर कुंभ में डुबकी लगाने की भी सोच रहे हैं।कुंभ का सफल आयोजन यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि अब हिंदू विरोधी शक्तियां भारत में सफल नहीं हो सकेंगी और उन्हें हिंदू मान्यताओं के साथ बराबरी का अधिकार देना ही होगा। कुंभ आयोजन अप्रत्यक्ष रूप से अहिंसक क्रांति का एक उद्घोष है और हिंदू समाज ने उस अहिंसक क्रांति को प्रमाणित कर दिया है।

विधानसभा में कुंभ में मरने वालों की संख्या योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट कर दी है दूसरी ओर संभल में मुसलमान की ओर से जो आक्रमण किया गया था उसकी रिपोर्ट भी न्यायालय में प्रस्तुत कर दी गई। मैं देख रहा हूं कि अखिलेश यादव इस बारे में अब कुछ नहीं बोल रहे हैं। संभल की घटना में अखिलेश यादव दिन-रात छाती पीटपीट कर चिला रहे थे कि पुलिस वालों ने गोली चलाई है लेकिन अब यह बात साफ हो गई है की चार लोगों की हत्या करने में मुस्लिम उग्रवादियों का हाथ था इनका नेतृत्व दुबई में बैठा हुआ संभल का एक मुसलमान कर रहा था। आश्चर्य है की अखिलेश यादव किसी की बात सुनने को तैयार नहीं थे दिन-रात चिल्ला चिल्ला कर कह रहे थे की संभल की घटना में मुसलमान का कोई दोष नहीं है सारा दोष पुलिस का है उनके सांसद ने कुछ गलत नहीं किया है और अब अखिलेश यादव का मुंह बंद है। इसी तरह अखिलेश यादव कुंभ के मामले में भी सैकड़ो लोगों के मरने की घोषणा कर रहे थे लाशें नदियों में बहा दी गई। एक मुर्ख कांग्रेस नेता ने तो अखिलेश से आगे आकर हजारों के मरने की घोषणा की थी। कल यह बात साफ हो गई कि मरने वालों की संख्या कितनी है और यह बात विधानसभा में बताई गई है। मैं अभी तक यह नहीं समझ पा रहा हूं की राजनीतिक आधार पर अखिलेश यादव इतना बढ़ा चढ़ा कर झूठ बोलने की क्यों कोशिश कर रहे हैं जिसमें खुद ही बाद में मुंह छुपाना पड़ता है। आज अखिलेश यादव राहुल गांधी से भी ज्यादा झूठ बोलने वाले नेता सिद्ध होते जा रहे हैं। राहुल तो झूठ बोलने में जल्दी पकड़ में नहीं आते लेकिन अखिलेश तो तुरंत पकड़ में आ जा रहे हैं। मैं चाहता हूं की अखिलेश यादव मुसलमान का साथ देते देते कहीं जनता के बीच अपना रही सही इज्जत भी न खो दें।

कुंभ समाप्त हो गया है मेरा लड़का कुंभ से लौट कर आया। उसने बताया कि कुंभ की व्यवस्था उम्मीद से कई गुना अच्छी थी। वहां के स्थानीय लोग बहुत ही प्रसन्न थे क्योंकि साल भर की उनकी कमाई एक महीने में ही हो गई थी। मेरा लड़का 15 किलोमीटर मोटरसाइकिल से गया मोटरसाइकिल वाले ने 500 रुपया लिया जबकि सामान्य तया उतनी दूर जाने का सौ रुपया होता है। मोटरसाइकिल वाला भी बहुत प्रसन्न था और मैं भी बहुत प्रसन्न था। अगर वैसे अवसर पर वह हजार रुपया भी मांग लेता तो मेरा लड़का दे देता। इसी तरह होटल वालों की भी साल भर की कमाई 1 महीने में हो गई है। अन्य छोटे-छोटे व्यापारी भी बहुत प्रसन्न थे और बड़े लोग तो प्रसन्न थे ही। स्थानीय लोगों का तो यहां तक कहना था कि ऐसा कुंभ जल्दी-जल्दी होना चाहिए। मैं यह नहीं समझ सका कि हमारे विपक्षी दलों के लोग स्थानीय लोगों की इस तरह की कमाई से इतना विरोध क्यों कर रहे थे। वहां किसी प्रकार की लूट का सूट या जबरदस्ती नहीं थी। जो लोग वहां पैसे वाले जा रहे थे वह अगर5 गुना अधिक खर्च करके भी सुविधा ले रहे थे और वहां के लोग 5 गुना अधिक लाभ उठा रहे थे तो मैं अभी तक नहीं समझ सका कि इससे हमारे विपक्ष को क्या दिक्कत थी। यह कौन सा समाजवाद है कि बड़े लोगों का पैसा बचा दिया जाए और वह गरीबों के हाथ में न जाए मेहनत करने वालों के हाथ में न जाए। कुंभ में सरकार की व्यवस्था भी बहुत ही अच्छी बताई गई। प्रारंभ में कुंभ में जाने वालों की संख्या 30 35 करोड़ अंदाज की गई थी लेकिन कुंभ की व्यवस्था की प्रशंसा सुन सुन करके वहां जाने वालों की संख्या दोगुनी हो गई। यह बात विपक्ष के गाल पर एक गंभीर तमाचा है। कल तो

हिमाचल के मुख्यमंत्री भी वहां गए थे और उन्होंने भी वहां की व्यवस्था की प्रशंसा की है। मेरी सलाह है कि विपक्ष कुंभ के आलोचना की गलती को स्वीकार करें और भविष्य में हिंदुओं के खिलाफ ऐसा अभियान शुरू न करें। अखिलेश ने कुंभ की आलोचना करके जो जुआ खेला था उस जुआ में अखिलेश हार गए योगी आदित्यनाथ जीत गए।

संघ की कार्यप्रणाली

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कल अपने संघ के स्वयंसेवकों को यह संदेश दिया है कि वह समाज में समरसता और भाईचारा का संदेश दें। हमारे सभी स्वयंसेवक का यह दायित्व है कि वह समाज के विभिन्न समूह में आपसी टकराव को कमजोर करके सामंजस्य में बदले। किसी संघ प्रमुख ने इतनी महत्वपूर्ण बात पहली बार कही है क्योंकि सच्चाई है की वर्ग संघर्ष को वर्ग समन्वय में बदलना बहुत बड़ी बात है। गांधी जीवन भर यही करते रहे संघ प्रमुख ने विशेष कर अपने उद्बोधन में धर्म के नाम पर होने वाले टकराव से भी बचने की सलाह दी जबकि मोहन भागवत के पहले जो भी संघ प्रमुख हुए हैं वह धर्म के मामले में चुप रहते थे। वैसे तो मोहन भागवत ने पिछले चार-पांच वर्षों में लगातार हिंदू और मुसलमान के बीच टकराव से बचने की सलाह दी है। उन्होंने बार-बार कहा है कि हमारा काम धार्मिक टकराव को बढ़ाना नहीं है बल्कि हिंदुत्व के मूल सिद्धांतों को मजबूत करना है मोहन भागवत ने अपने भाषण में यह बात भी कहीं की हमें भाषाई टकराव से भी बचना चाहिए सभी लोगों को अपनी मातृभाषा में बात करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए भाषाई टकराव भी समाज के लिए अहितकर है। मेरे विचार से हम हिंदुओं का यह कर्तव्य है कि हम मोहन भागवत के संदेश को गहराई से समझे। मैं ओवैसी सरीके कट्टरपंथी मुसलमानों और मुसलमान के समर्थक विपक्षी दलों से निवेदन करूंगा कि वे मोहन भागवत की प्रशंसा ना करके बल्कि कट्टरपंथी मुसलमानो को भी ऐसा ही संदेश दें जैसा मोहन भागवत ने हिंदुओं को दिया है। जो मुसलमान मोहन भागवत की प्रशंसा करके अपने को धर्मनिरपेक्ष सिद्ध करना चाहते हैं उन मुसलमान का आचरण संदेहास्पद है क्योंकि वे हिंदुओं से तो समानता की उम्मीद करते हैं मुसलमान को ऐसा संदेश नहीं देते जैसा मोहन भागवत ने अपने स्वयंसेवकों को दिया है। मैं चाहता हूं कि हमारे कट्टरपंथी मुसलमान की तरफ से भी मुस्लिम कट्टरवाद के मामले में ऐसा ही संदेश सामने आवे जैसा मोहन भागवत ने दिया है।

आज से 33 वर्ष पहले मैंने रामानुजगंज के जंगलों में बैठकर यह निष्कर्ष निकाला था कि यदि संघ गांधीवादियों के अच्छे लोग एक साथ बैठ जाएं तो देश की अधिकांश समस्याओं का समाधान निकल सकता है। उस समय से लगातार इस तरह के प्रयत्न चलते रहे। उन प्रयत्नों में गांधीवादियों ने उस समय बहुत अधिक सक्रियता भी दिखाई लेकिन धीरे-धीरे गांधीवादियों पर साम्यवाद का प्रभाव बढ़ता गया दूसरी ओर संघ में कुछ कट्टरपंथी सावरकर वाडियो ने हमारी इस योजना का खुला विरोध किया। लेकिन गांधीवादी लगभग महत्वहीन हो गए और संघ से भी सावरकर वाडियो का लगभग समापन हो रहा है। अब धीरे-धीरे गांधी के विचार और संघ का संगठन यह दोनों एक साथ मिलकर देश की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। मेरे विचार से वर्तमान समय में भारत सबसे अच्छी दिशा में बढ़ रहा है इतना ही नहीं भारत के आगे बढ़ने की गति भी बहुत तेज है। लाख विरोध के बाद भी जिस तरह इलाहाबाद में कुंभ का सफल आयोजन हुआ वह हमारे भारत का ठीक दिशा में आगे बढ़ने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अब नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत गांधी विचारों को आगे बढ़ा रहे हैं जिन विचारों को नेहरू परिवार ने पाताल तक पहुंचा दिया था। अब मुझे खुशी है की धीरे-धीरे भारत नेहरू परिवार की छाया से मुक्त हो रहा है और भारत गांधी विचारों की दिशा में आगे बढ़ रहा है। मैं यह भी जानता हूं की नेहरू परिवार अंबेडकरवादी मुसलमान कम्युनिस्ट और बच्चे खुचे सावरकर वादी भी इस नई परिस्थिति का विरोध करेंगे। यह कभी खुलकर तो कभी छिपकर नरेंद्र मोदी मोहन भागवत की एकता को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे लेकिन अब भारत इतना समझदार हो चुका है कि इन सांप्रदायिक तानाशाह और स्वार्थी तत्वों से बचकर चलेगा। अब नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत की जोड़ी मिलकर भारत को निरंतर आगे ले जाएंगे।

मैंने संघ की कार्य प्रणाली निकट से देखी है। मेरी यह निश्चित धारणा है कि भारत में संघ एक ऐसी संस्था है जिसमें ईमानदार लोगों को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। संघ में किसी भी प्रकार का जातीय या सामाजिक भेदभाव नहीं है संघ अपने साधारण कार्यकर्ताओं को भी योग्यता अनुसार आगे बढ़ाता है और संघ में यह विशेष महत्वपूर्ण है कि जो व्यक्ति छल कपट वाला है दांव पेच करने वाला है उसको बुरा आदमी माना जाता है। यही कारण है कि भारत में उच्च राजनीतिक पदों पर धीरे-धीरे ऐसे छल कपट वाले लोगों को किनारे किया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में अनेक प्रदेशों में जो मुख्यमंत्री चुने गए उसमें संघ और नरेंद्र मोदी की संयुक्त भूमिका रही है। दिल्ली में भी संघ के प्रयत्नों से ही रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाया गया। मैं जानता हूं की रेखा गुप्ता की तुलना में अन्य लोग अधिक सक्षम थे लेकिन यह भी सही है कि वह अन्य लोग अधिक सक्षम होते हुए भी दांव पेच अधिक करना जानते थे जो रेखा गुप्ता में नहीं दिखता है। आज भारत में अगर स्वच्छ राजनीति को बढ़ावा दिया जा रहा है उसके पीछे संघ की महत्वपूर्ण भूमिका है। नरेंद्र मोदी और संघ परिवार एक साथ बैठकर जिस तरह का बदलाव कर रहे हैं वह बदलाव बहुत अच्छी दिशा में है अन्ना हजारे ने भी इस बदलाव की प्रशंसा की है मैं भी इस बदलाव का प्रशंसक हूं। भारत की अधिकांश समस्याओं का समाधान नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत मिलकर कर सकेंगे ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। यदि हम सांप्रदायिकता जातिवाद छल कपट से राजनीति को बचाना चाहते हैं तो आंख बंद करके नरेंद्र मोदी मोहन भागवत की जोड़ी का समर्थन करना चाहिए।

राजनैतिक चर्चा

भारतीय राजनीति में दो स्पष्ट ध्रुवीकरण दिख रहे हैं सारा का सारा विपक्ष सिर्फ सांप्रदायिक मुसलमान और कम्युनिस्ट पर निर्भर है उनके पास अलग से कुछ नहीं है इसलिए विपक्षी दल आपस में खींचतान करते रहते हैं चाहे राहुल गांधी हो या अरविंद केजरीवाल या अन्य कोई भी अन्य। सभी मुसलमान पर निर्भर हैं। दूसरी ओर संघ और नरेंद्र मोदी मिलकर सफलता के झंडे लगातार गाडते जा रहे हैं। विपक्षी नेता इस बात को समझ नहीं पा रहे हैं कि वह क्या करें। राहुल गांधी ने एक बार गुजरात चुनाव में हिंदुत्व को साथ लेने का प्रयास किया था जब सफलता नहीं मिली तो तुरंत ही उन्होंने अपनी सोच में बदलाव कर लिया और कम्युनिस्टों को साथ लेकर मुसलमान के साथ जुड़ गए। हरियाणा चुनाव में फिर से राहुल गांधी को ऐसा महसूस हुआ कि हमें हिंदुओं को साथ लेना पड़ेगा। अब राहुल गांधी रात में सोचते हैं कि हमें कुंभ जाना चाहिए और जब दिन में कम्युनिस्टों से भेंट होती है कुंभ में जाना छोड़ देते हैं। प्रतिदिन राहुल गांधी इस असमंजस में है कि हम कम्युनिस्ट और मुसलमान को साथ लेकर चले अथवा हिंदुओं को अपने साथ जोड़े। कांग्रेस पार्टी नाम की अब कोई चीज नहीं बची है सिर्फ राहुल गांधी अकेले ही कांग्रेस हैं जो भी निर्णय लेना हो राहुल गांधी ही ले रहे हैं। जबकि संघ के पास गंभीर चिंतन है एक लंबी योजना है और संघ से राहुल गांधी किसी भी प्रकार से मुकाबला नहीं कर सकेंगे। अरविंद केजरीवाल ने भी जिस तरह मोहन भागवत को जिस भाषा में चिट्ठी लिखी थी वह चिट्ठी उचित नहीं थी संघ के लिए इस प्रकार की भाषा का उपयोग कोई मूर्ख ही कर सकता है। यदि अरविंद ने चिट्ठी नहीं लिखी होती तब भी परिणाम तो यही होता लेकिन भविष्य में संघ और मोदी के बीच मतभेद के अवसर खुले रहते। अरविंद ने वह रास्ता बंद कर दिया है और यह बात पूरी तरह प्रमाणित है कि जब तक संघ परिवार और नरेंद्र मोदी के बीच में कोई भेद नहीं पैदा होगा तब तक विपक्ष समाप्त ही होता रहेगा। कम्युनिस्टों की सलाह लेकर अरविंद तो अपना भविष्य खराब खराब कर दिए हैं राहुल गांधी जरूर अभी इस बात पर गंभीरता से सोच रहे हैं कि हम कम्युनिस्टों के साथ जाएं अथवा कम्युनिस्टों को छोड़कर अलग नीति पर चले। अखिलेश यादव ने कुंभ स्नान करके अपना रास्ता खुला रखा है उद्धव ठाकरे भी गंभीरता से विचार कर रहे हैं अरविंद केजरीवाल के पतन ने सारे विपक्षी नेताओं को कुछ सोचने के लिए मजबूर कर दिया है।

पिछले 10 वर्षों से जब से भारत में सत्ता का बदलाव हुआ है, उस समय से लेकर अब तक कई सुधार दिख रहे हैं। अब धीरे-धीरे खानदानी सत्ता पर से विश्वास उठता जा रहा है एक ही परिवार का व्यक्ति लंबे समय तक राजनीतिक सत्ता में बना रहेगा यह संभावना घटती जा रही है। यह बात भी साफ दिख रही है की चालाक लोग सत्ता के उच्च सिंहासन प्राप्त करने में दिक्कत महसूस कर रहे हैं। अपेक्षाकृत अधिक शरीफ लोगों को मुख्यमंत्री पद आवंटित किए जा रहे हैं। यह बात भी साफ दिख रही है की अपेक्षाकृत ईमानदार लोगों को आगे बढ़ाया जा रहा है। मुख्यमंत्रियों में धीरे-धीरे भ्रष्टाचार भी कम हो रहा है। जातिवाद भी निरंतर कम हो रहा है। जो लोग अपने को आदिवासी दलित या अन्य जाति का मानते हैं ऐसे लोगों को निरुत्साहित किया जा रहा है जाति की चर्चा कम हो रही है। चौथी बात यह भी साफ दिख रही है कि हिंदुत्व और राष्ट्रीयता मजबूत हो रही है सांप्रदायिकता को निरंतर निरुत्साहित किया जा रहा है मुसलमान को भी धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ाया जा रहा है यह सब सुधार समाज के लिए एक बहुत अच्छी दिशा के रूप में है। खासकर ऐसे वातावरण में जब सरकार को संविधान संशोधन के अधिकार प्राप्त नहीं है सरकारी मशीनरी और न्यायपालिका पुराने ढर्रे पर चल रही है उसके बाद भी इतने बदलाव बहुत उत्साह जनक है। लेकिन अभी तक यह बात साफ नहीं हो सकी है इन बदलाव में कितनी भूमिका संघ परिवार की है कितनी नरेंद्र मोदी की है। मैंने तो यही निष्कर्ष निकाला है कि नरेंद्र मोदी और संघ परिवार के बीच एक अच्छा तालमेल बना हुआ है। ऐसा महसूस होता था की 1 साल पहले वह तालमेल कुछ बिगड़ रहा है और नरेंद्र मोदी तथा संघ के बीच तालमेल में कमी आ रही है लेकिन पिछले चुनाव के बाद ऐसा साफ दिखने लगा है कि संघ परिवार के साथ नरेंद्र मोदी ने एक साथ चलने की अच्छी तैयारी कर ली है। अब यह स्पष्ट दिख रहा है की वर्तमान सरकार पर संघ परिवार की पकड़ मजबूत होती जा रही है और नरेंद्र मोदी संघ की लाइन पर चल रहे हैं।

पिछले कुछ दिनों से भारत की कांग्रेस पार्टी की नीतियों में बहुत बदलाव दिख रहा है। हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव के बाद लगता है कि कांग्रेस पार्टी अपनी नीतियों में बहुत बदलाव करना चाहती है। अभी कांग्रेस पार्टी ने भारत सरकार से यह मांग की है कि पाकिस्तान भारत का शत्रु है और पाकिस्तान के साथ भारत को मैच नहीं खेलना चाहिए था। यह बात पूरी तरह राहुल गांधी की नीतियों में एक साफ बदलाव का प्रतीक है। राहुल गांधी यह महसूस कर रहे हैं कि हिंदुओं को किनारे करके सिर्फ मुसलमान को साथ लेकर चलना बहुत घातक होगा। इसलिए सोच समझकर उन्होंने पाकिस्तान का विरोध किया है। इसके साथ-साथ कांग्रेस पार्टी ने लीव इन रिलेशनशिप के संबंध में भी एक नई नीति घोषित की है कांग्रेस पार्टी का कहना है की लीव इन रिलेशनशिप बहुत घातक प्रथा है और इसका खुलकर विरोध किया जाना चाहिए। अब तक कांग्रेस पार्टी लीव इन रिलेशनशिप का विरोध नहीं करती थी लेकिन उत्तराखंड में जिस तरह समान नागरिक संहिता लागू की गई और लीव इन रिलेशनशिप पर कुछ अंकुश लगाने की कोशिश हुई तब कांग्रेस पार्टी ने भी अपनी नीति बदली और लिविंग पर और अधिक कठोर नियंत्रण की बात कही। इस तरह यह बात साफ दिखती है कि कांग्रेस पार्टी को यह बात समझ में ही नहीं आ रही है कि वह मुसलमान को छोड़े या मुसलमान पर आश्रित रहे इसलिए दिन में कांग्रेस पार्टी मुसलमान के साथ खड़ी रहती है रात को हिंदू के पक्ष में हो जाती है। कोई साफ-साफ फैसला नहीं हो पा रहा है। और यह दुविधा कांग्रेस पार्टी को और अधिक डुबायेगी।

मैं लंबे समय तक अरविंद केजरीवाल के साथ रहा हूं मैंने उनको निकट से देखा भी है। अरविंद केजरीवाल बहुत सादा जीवन जीते हैं खाने-पीने में उनको किसी तरह का कोई अलग शौक नहीं है बिल्कुल साधारण खाना खाते हैं उनके पूरे परिवार की यही स्थिति है। उन्हें रहने के लिए भी कोई महंगा घर नहीं चाहिए वह कहीं साधारण घर में भी रह सकते हैं जमीन पर भी सो सकते हैं। फिर भी अरविंद केजरीवाल ने शीश महल बनाया यह एक गंभीर सोच का विषय है। मैं जहां तक समझा हूं मेरे विचार में अरविंद केजरीवाल ना मुख्यमंत्री बनना चाहते थे ना किसी और पद की लालच थी उन्हें तो सिर्फ प्रधानमंत्री पद ही दिख रहा था और उस पद के लिए भी उनके अंदर धैर्य नहीं था वह तुरंत प्रधानमंत्री बनना चाहते थे। इसी जल्दबाजी में उन्होंने पूरे देश भर में अपने राजनीतिक दल को खड़ा करने की कोशिश की इसके लिए उन्हें बहुत धन की जरूरत थी और उस धन की व्यवस्था दिल्ली मंत्रिमंडल ही कर सकता था। यही कारण है कि अरविंद केजरीवाल ने शीश महल बनाया जिस शीश महल के बनने से 10 15 करोड़ रूपया उन्हें चुनाव में मिल सके। दिल्ली में और भी जो घोटाले हुए हैं वह सब इसी तरह पैसे की जुगाड़ के लिए किए गए हैं दुर्भाग्य से अरविंद केजरीवाल की पोल खुल गई और अरविंद केजरीवाल का सपना टूट गया लगता है। अब अरविंद केजरीवाल प्रधानमंत्री तो क्या कोई चपरासी भी बन पाएंगे ऐसी मुझे संभावना नहीं दिखती। अरविंद केजरीवाल के पतन ने यह संकेत दे दिया है अन्य क्षेत्रीय दलों का भी भविष्य ठीक नहीं है। मुझे तो यही दिखता है कि अगले पांच सात वर्षों में वर्तमान विपक्षी दल खत्म होकर एक नए विपक्षी दल का उदय होगा जो इन सब से अलग राह पर चलेगा। उस नए विपक्षी दल के रूप में भारत में कोई गांधी जयप्रकाश अन्ना सरिका लहर चलेगी और तभी इस व्यवस्था में बदलाव संभव है। तब तक विपक्षी दलों के समाप्त होने की प्रतिक्षा के अतिरिक्त और हमारे पास कोई उपाय नहीं है।

यह सामाजिक नियम है कि जब कोई दो बड़ी शक्तियां आपस में अंतिम रूप से संघर्षरत हो जाती हैं तो अनेक छोटी शक्तियां बीच में दोनों को ब्लैकमेल करके लाभ उठाती हैं। यही पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच हुआ यही सांप्रदायिकता में हिंदू और मुसलमान के बीच हुआ यही राजनीति में कांग्रेस और भाजपा के बीच हुआ और यही स्थिति हर मामले में देखने को मिलती है। अमेरिका और साम्यवाद के बीच टकराव में भारत पाकिस्तान तथा कुछ अन्य छोटे-छोटे देशों ने बिचौलिया बनकर लाभ उठाया। कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के बीच में भी अनेक छोटे-छोटे दलों ने बहुत लाभ उठाया है हिंदू और मुसलमान के बीच में भी सिख दलित या अन्य कई छोटे संगठनों ने बहुत ब्लैकमेल किया है। अभी तक इस प्रकार की ब्लैकमेलिंग चलती रही है लेकिन पिछले दो-तीन महीना में एक बहुत बड़ा बदलाव दिख रहा है। ट्रंप ने आने के बाद जिस तरह रूस से हाथ मिलाने की कोशिश की है उससे बिचौलिए बहुत परेशान हो गए हैं। उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा है कि अब हमारा क्या होगा क्योंकि ट्रंप और पुतिन के एक हो जाने से बिचौलियों की परेशानी स्वाभाविक है। इसी तरह पिछले दो-तीन महीना पहले जब मोहन भागवत ने मुसलमान के विषय में कुछ बयान दिया तो सावरकर वादियो की हवा निकल गई। सावरकर वादी लगातार मुसलमान को अनावश्यक गालियां दे देकर संघ को ब्लैकमेल करते रहते थे सावरकर वादी यह दिखाने का प्रयास करते थे कि वही हिंदू हैं। समय-समय परमोहन भागवत और नरेंद्र मोदी की भी आलोचना करने की हिम्मत कर देते थे लेकिन जब से मोहन भागवत में मुसलमान के संबंध में बयान दिया है तब से सावरकर वीडियो को समझ में नहीं आ रहा है कि हम किधर जाएं। ठीक यही स्थिति राहुल गांधी ने बना दी है अनेक छोटे-छोटे दल बीजेपी को और संघ को गाली दे देकर राहुल गांधी को ब्लैकमेल करते थे। यह छोटे-छोटे दल कांग्रेस पार्टी को कमजोर करके स्वयं मजबूत भी होते रहते थे और समय-समय पर कांग्रेस पार्टी को आंख भी दिखाते रहते थे। जब से राहुल गांधी ने अलग मार्ग अपनाया है तब से मैं देख रहा हूं कि अरविंद केजरीवाल लालू यादव अखिलेश यादव उद्धव ठाकरे आदि बहुत परेशान हो गए हैं। इन सब बिचौलियों को समझ में नहीं आ रहा है कि अब इनका राजनीतिक भविष्य क्या होगा। अभी तक तो यह लोग दिन-रात सन्घ को गाली देकर कांग्रेस पार्टी को ब्लैकमेल करते रहते थे। इस तरह मैं देख रहा हूं की ट्रंप मोहन भागवत राहुल गांधी ने कुछ नई दिशा लेकर बिचौलियों को झटका दिया है। भविष्य में क्या होगा यह और देखने की जरूरत है। घर जलेगा या बचेगा यह तो अभी पता नहीं है लेकिन चूहे जरूर मर जाएंगे यह निश्चित है।

कल दुनिया के मुसलमान के संबंध में दो महत्वपूर्ण समाचार चर्चा में रहे। पहला समाचार यह है कि गाजियाबाद में इस्लाम नामक एक मुसलमान रोटियों में थूक लगाते हुए गिरफ्तार किया गया यह कोई नई बात नहीं है लेकिन इस पर गंभीर चिंतन जरूरी है। दूसरी घटना में ब्रिटेन सरकार ने ग्रूमिंग गैंग्स केप्रति गंभीर चिंता व्यक्त की है। ग्रूमिंग गैंग्स ऐसे लोगों को कहा जाता है जो 14 से 17 साल की लड़कियों के साथ किसी तरह यौन संबंध बनाने का प्रयत्न करते हैं। ब्रिटेन में लंबी खोजबीन के बाद यह पाया गया कि ऐसे

लोगों की 80% संख्या पाकिस्तानियों की है जो लगभग मुसलमान है। यह एक गंभीर प्रश्न है की दुनिया में मुसलमान थूक लगाकर खाना देने के प्रति इतना संवेदनशील क्यों है और दूसरी बात कि मुसलमान इतना कामुक क्यों होता है। यह दोनों ही बातें हैं भारत में प्रमाणित हो चुकी है लेकिन कारण अभी तक साफ नहीं है। बचपन में मेरी मां और दादी बताया करती थी कि मुसलमान पानी भी थूक कर देते हैं मुझे विश्वास नहीं था मेरे कुछ मुसलमान मित्र थे उन्होंने भी यह बात स्वीकार की लेकिन उन्होंने बताया की ऐसी गलती सिया लोग करते हैं सुनी नहीं। वर्तमान समय में तो शिया सुन्नी सभी इस मामले में लगातार पकड़े जा रहे हैं आखिर कारण क्या है क्या मुसलमान को माता-पिता से ही कुछ ऐसे संस्कार मिलते हैं की थूक में भाईचारा हैअथवा थूक का वैसा ही प्रभाव दूसरों पर पड़ता है जैसे हिंदुओं में मंत्रों का पड़ता है या कोई भी और बात हो सकती है लेकिन अब मुसलमान इस बात से इनकार नहीं कर पा रहा कि यह बात गलत है। मुसलमान के बच्चे कामुकहोते हैं यह बात तो मुझे पहले से मालूम थी और 65 वर्ष पहले हम लोगों ने रामानुजगंज शहर में इसका समाधान भी कर लिया था। मैं हमेशा अपने लेखों में यह लिखा कि मैं अपने घर के आसपास किसी मुसलमान को नहीं बसने देता यहां तक कि मैं अपने मुसलमान मित्रों को अपने पारिवारिक घर में प्रवेश भी नहीं करने देता था जबकि मुसलमान मित्रों के घरों में मेरा खुला आना जाना था। तो यह बात बिल्कुल साफ है कि मुसलमान बहुत कामुक होता है लेकिन यह कामुकता कहां से मिली या तो गर्भ से मिली या जन्म के बाद कुछ माता-पिता से मिली लेकिन मुझे ऐसा लगता है इस कामुकता का उपयोग धर्म गुरुओं ने अपनी संख्या बढ़ाने के लिए किया और धर्म गुरुओं ने मुस्लिम बच्चों को इसके लिए प्रोत्साहित भी किया। कारण चाहे जो भी हो लेकिन इन दोनों गंदी आदतों पर भारत के मुसलमान को गंभीरता से विचार करना चाहिए अन्यथा सारी दुनिया सभी मुसलमानों पर संदेह करने लगी है।

वैचारिक चर्चा

मेरा ऐसा मानना है कि किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार कोई अपराध नहीं होता क्योंकि भ्रष्टाचार करने में ना किसी प्रकार का बल प्रयोग होता है ना ही कोई जालसाजी होती है।भ्रष्टाचार तो एक प्रकार से सौदेबाजी है। कोई भी भ्रष्टाचार किसी मौलिक अधिकार का उल्लंघन नहीं करता बल्कि संवैधानिक अधिकार का उल्लंघन करता है। स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार अप्रत्यक्ष रूप से हमें दिए गए अधिकारों का दुरुपयोग है और इसके लिए हमें अधिकार देने वाली इकाई ही दंडित कर सकती है न्यायालय को इसमें दखल नहीं देना चाहिए। कोई सरकारी कर्मचारी यदि भ्रष्टाचार करता है तो आप सरकार से उसकी शिकायत कर सकते हैं सरकार उसे दंडित कर सकती है सरकार उसे नौकरी से निकाल सकती है इसमें न्यायालय को क्यों दखल देना चाहिए क्योंकि भ्रष्टाचार करने वाले ने सरकार के अधिकार का दुरुपयोग किया है। मेरे किसी अधिकार का दुरुपयोग नहीं किया है। मेरा यह स्पष्ट मानना है कि भ्रष्टाचार रोकना सरकार का काम है न्यायालय का नहीं क्योंकि भ्रष्टाचार कोई अपराध नहीं होता।

मैं लंबे समय से इस बात पर जोर देता रहा हूं कि न्याय शीघ्र होना चाहिए दंड कठोर होना चाहिए दंड प्रभाव उत्पादक होना चाहिए लेकिन हमारे भारत की संवैधानिक व्यवस्था ठीक विपरीत दिशा में कार्य करती रही। न्याय बहुत विलंब से होने लगा दंड को मानवता के साथ जोड़ दिया गया जेल को सुधार गृह बना दिया गया। परिणाम हुआ कि देश में अपराध बहुत तेजी से बढ़ते गए क्योंकि जब अपराध नियंत्रण करने वाली इकाई ही फेल हो जाएगी तो अपराधों का बढ़ना स्वाभाविक है। कल ही समाचार आया है की 2 वर्ष पहले अमेरिका में किसी अपराधी ने सलमान रस्दी पर हिंसक बल प्रयोग किया था और उन्हें चोट आई थी। 2 वर्ष में ही अमेरिका की न्याय व्यवस्था ने अपराधी को 30 वर्ष की सजा सुनाई है। आप फिर से सुन लीजिए कि अपराधी को 30 वर्षों का दंड दिया गया है। भारत में यदि इस प्रकार का कोई अपराध होता तो उसकी सजा अधिकतम 7 वर्ष होती और वह 7 वर्ष में बहुत दिन छुट्टियों में चले जाते और किसी न किसी बहाने उस सजा को कम कर दिया जाता। अब आप विचार करिए कि अगर अपराध भारत में नहीं बढ़ेंगे तो क्या अमेरिका में बढ़ेंगे क्या चीन में बढ़ेंगे। भारत में यदि अपराध बढ़ रहे हैं तो भारत सरकार की गलत नीतियों के कारण बढ़ रहे हैं ना की अपराधियों की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसलिए सरकार को विचारकों की यह बात गंभीरता से सुननी चाहिए की न्याय त्वरित होना चाहिए प्रभावकारी होना चाहिए अमानवीय होना चाहिए और अब दंड का प्रावधान सुधार गृह के रूप में बिल्कुल बंद होना चाहिए। व्यक्ति के प्रवृत्ति में सुधार करना सरकार का काम नहीं है समाज का काम है।

शाहिर लुधियानवी एक बड़े शायर माने जाते हैं। उन्हें बहुत अधिक प्रतिष्ठा भी मिलती है। उनका एक बहुत प्रसिद्ध शेर है जिसके अनुसार नारी ने पुरुष को जन्म दिया पुरुषों ने उसे बाजार दिया जब जी चाहा कुचला मसला जब जी चाहा दुत्कार दिया। मैंने उनके इस कथन पर गंभीरता से विचार किया। बड़ी संख्या में लोग उनके इस वाक्य को स्थापित करते हैं लेकिन मेरे विचार में उनका यह कथन पूरी तरह गलत है। आज तक दुनिया में किसी महिला ने किसी पुरुष को जन्म दिया हो यह बात सच नहीं है। सच बात यह है कि किसी भी बालक या बालिका के जन्म में पुरुष की भी भूमिका उतनी ही होती है जितनी महिला की। आज तक मैंने तो ऐसा सुना ही नहीं है कि किसी महिला ने अकेले ही किसी को जन्म दे दिया हो। हो सकता है कि अपवाद स्वरूप कहीं ऐसे मामले होंगे लेकिन आमतौर पर नहीं होते। शायर का जन्म कैसे हुआ मुझे नहीं मालूम हो सकता है की शायर के पिता ने उनकी माता के साथ वैसा ही दुर्व्यवहार किया हो जैसा इन्होंने लिखा है। दूसरी बात उन्होंने यह भी कहीं की महिलाओं को पुरुषों ने बाजार के रूप में उपयोग किया यह बात भी पूरी तरह गलत है क्योंकि महिला और पुरुष यह दोनों एक परिवार के अंग होते हैं यदि महिला को पुरुष ना मिले तो महिला भाग कर पुरुष के पास जाती है और अगर पुरुष को महिला ना मिले तो वह भी उतना ही परेशान होता है। मैं तो ऐसे मामले प्रायः सुनता रहता हूं जहां महिला और पुरुष के एकाकार होने में यदि कहीं बाधा होती है तो दोनों एक साथ फांसी पर चढ़ जाते हैं। मेरे विचार से उनकी दूसरी लाइन भी पूरी तरह गलत है। महिला और पुरुष इन दोनों की एक दूसरे के साथ संयुक्त भूमिका है किसी की अधिक नहीं किसी की कम नहीं इसलिए महिला और पुरुष के बीच में दीवार खड़ी करके लुधियानवी जीने बहुत गलत किया है और अब उस गलती को सुधारने की जरूरत है आगे बढ़ाने की नहीं। मैं इस बात के पूरी तरह खिलाफ हूं कि शाहीर लुधियानवी ने जो कहा है उसे अब आगे बढ़ाया जाए।

अरविन्द केजरीवाल

वैसे तो भारत में अनेक नेताओं का राजनीतिक उत्थान और पतन देखने को मिलता रहा है लेकिन उत्थान और पतन का जो इतिहास अरविंद केजरीवाल ने बनाया वह अभूतपूर्व है। जितनी तेजी से अरविंद केजरीवाल राजनीति के शिखर पर पहुंचे उतनी ही तेज गति से वे राजनीति के पाताल तक चले गए। अरविंद केजरीवाल का राजनीतिक जीवन लगभग 12 वर्षों का है। उसके पहले अरविंद केजरीवाल का ना कोई राजनीतिक संबंध था ना कोई दिशा थी और अब 2025 के बाद अरविंद केजरीवाल का राजनीतिक जीवन संध्या समान हो गया है। प्रश्न उठता है की इतनी तेज गति से यह गिरावट क्यों आई। राजनीतिक मामलों में अरविंद केजरीवाल ने इन 12 वर्षों में कई जगह भूल की लेकिन वह गलतियां राजनीतिक स्तर पर थी सामाजिक स्तर पर उससे अरविंद केजरीवाल पर लांछन नहीं लगते थे। उन्होंने जो भी भ्रष्टाचार किया उन्होंने जो भी झूठ बोले वह सब आमतौर पर भारत की राजनीति में मान्य है उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। आज तक लालू पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा रामविलास पासवान पर प्रभाव नहीं पड़ा और भी अनेक लोगों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है लेकिन अरविंद केजरीवाल ने दो जगह ऐसी

गलतियां की जो वास्तव में सामाजिक अपराध माना जाना चाहिए । पहली गलती अरविंद ने की कि उन्होंने कुमार विश्वास को गिरफ्तार करने का आदेश दिया कुमार विश्वास ने कोई झूठ नहीं बोला था। यह अवश्य है की कुमार विश्वास ने अरविंद केजरीवाल से हुई गुप्त वार्ता को राष्ट्रीय हित में उजागर कर दिया था लेकिन यह कार्य ऐसा नहीं था उसके लिए अरविंद केजरीवाल कुमार विश्वास को जेल में बंद कर दें। दूसरी बड़ी गलती अरविंद केजरीवाल की थी कि उन्होंने शीश महल बनाया। एक दो करोड़ रूपया लगाकर अगर वह मरम्मत कर लेते इससे कोई सामाजिक बदनामी नहीं होती लेकिन शीश महल बनाने के नाम पर अरविंद केजरीवाल के पास समाज में कोई जवाब नहीं है। आज भी शीशमहल के मामले में अरविंद केजरीवाल मुंह छुपाते दिखते हैं। मेरा यह मानना है कि कुमार विश्वास की गिरफ्तारी और शीश महल बनाने की योजना यह दोनों इस प्रकार के कार्य हैं जिनके लिए अरविंद केजरीवाल के सामाजिक पतन में महत्वपूर्ण भूमिका मानी जानी चाहिए। तेज गति से राजनीतिक उत्थान और पतन की यह ऐतिहासिक घटना लंबे समय तक भारत में याद की जाएगी।

विश्वास और अंध विश्वास

भारत पाकिस्तान के क्रिकेट मैच के पहले एक साधु ने यह खुलकर घोषणा कर दी थी कि किसी भी हालत में भारत नहीं जीत सकेगा। उस साधु को देश भर के मानने वालों ने बहुत प्रसारित भी किया लेकिन क्रिकेट भारत जीत गया। यह बात सही है कि अगर भारत हार जाता तो उस साधु का मान सम्मान बहुत बढ़ जाता अन्यथा उसका कुछ खास बिगड़ा नहीं फिर वह इसी तरह जुआ खेलेगा। मैं आपको स्पष्ट कर दूं कि किसी भी व्यक्ति के भविष्य के बारे में किसी प्रकार की घोषणा पूरी तरह गलत होती है उसमें कोई सच्चाई नहीं हो सकती मैंने अपने जीवन भर में कभी भविष्यवक्ताओं पर विश्वास नहीं किया और मैं पूरा सफल रहा कोई भी राशि नक्षत्र या अन्य का प्रभाव कभी मेरे ऊपर नहीं पड़ा क्योंकि मैं इन पर विश्वास करता ही नहीं हूं मैं अच्छी तरह समझ चुका हूं कि यह एक प्रकार की दुकानदारी है और इस दुकानदारी में हम पूरी तरह ठगे जाते हैं इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि आप न भविष्यवक्ताओं पर विश्वास करें ना कभी कोई भविष्यवाणी करें क्योंकि किसी का भविष्य न तो बताया जा सकता है और ना ही बताए गए भविष्य का किसी प्रकार से कोई प्रभाव होता है। वास्तविक सच्चाई है की कर्म पर ही परिणाम मिलता है आपकी जैसी क्षमता और योग्यता होगी उसी के अनुसार आपका भविष्य बनेगा।

मेरा ऐसा मानना है कि किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार कोई अपराध नहीं होता क्योंकि भ्रष्टाचार करने में ना किसी प्रकार का बल प्रयोग होता है ना ही कोई जालसाजी होती है।भ्रष्टाचार तो एक प्रकार से सौदेबाजी है। कोई भी भ्रष्टाचार किसी मौलिक अधिकार का उल्लंघन नहीं करता बल्कि संवैधानिक अधिकार का उल्लंघन करता है। स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार अप्रत्यक्ष रूप से हमें दिए गए अधिकारों का दुरुपयोग है और इसके लिए हमें अधिकार देने वाली इकाई ही दंडित कर सकती है न्यायालय को इसमें दखल नहीं देना चाहिए। कोई सरकारी कर्मचारी यदि भ्रष्टाचार करता है तो आप सरकार से उसकी शिकायत कर सकते हैं सरकार उसे दंडित कर सकती है सरकार उसे नौकरी से निकाल सकती है इसमें न्यायालय को क्यों दखल देना चाहिए क्योंकि भ्रष्टाचार करने वाले ने सरकार के अधिकार का दुरुपयोग किया है। मेरे किसी अधिकार का दुरुपयोग नहीं किया है। मेरा यह स्पष्ट मानना है कि भ्रष्टाचार रोकना सरकार का काम है न्यायालय का नहीं क्योंकि भ्रष्टाचार कोई अपराध नहीं होता

पत्रोत्तर
सत्यपाल शर्मा, बरेली, उत्तर प्रदेश

विचार - आपके ओजस्वी, प्रखर, प्रगतिशील, सारगर्भित विचारों से मार्गदर्शन मिलता है। भारतीय राजनीति पर जन जागरण हो रहा है। आदर्श लोकतंत्र तो लोक स्वराज्य ही हो सकता है। लोकतंत्र अराजकता का जनक माना जाता है। लोकतंत्र पश्चिम की नकल है। पश्चिमी देश श्रम अभाव देश है और भारत श्रम बहुल देश है। यह सत्य है कि हमारा निर्वाचित जनप्रतिनिधि समाज में और संसद में स्वतंत्रता से नहीं बोल सकता। महिला उत्पीड़न को कानूनी संरक्षण दिया गया है उसी तरह पुरुष उत्पीड़न को कानूनी संरक्षण दिया जाए। आज धूर्त लोग महंगाई, बेरोजगारी, कानून व्यवस्था आदि समस्याओं की आड़ में संगठन बनाकर आंदोलन करते हैं जिससे सामान्य लोगों को परेशानी होती है। धूर्त महिलाएं परिवार व्यवस्था को कमजोर कर रही है। अपराधी धन बल से चुनकर संसद और विधानसभाओं में पहुंच रहे हैं। दागी व्यक्ति को सांसद विधायक चुने जाने पर रोक लगे। वक्फ कानून प्राकृतिक न्याय, भारतीय संस्कृति और मौलिक अधिकारों के विरुद्ध है। इजरायल द्वारा आतंकवादियों को मारा जाना उचित है। हमारी पहली आवश्यकता है सुरक्षा और न्याय। पूरी दुनिया में हिंदू धर्म ही ऐसा अकेला धर्म है जो समाज व्यवस्था पर आधारित है। आज वोट बैंक बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय धन को पात्र तथा अपात्र का विचार बिना बांटा जा रहा है वह गलत है। कितना बड़ा राष्ट्रद्रोही अपराधी हो उसे मृत्युदंड देने से सरकार डरती है। भ्रष्टाचार मुक्त बनाना किसी के बस की बात नहीं है। माननीय नरेंद्र मोदी जी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ का अनुसरण करने वाले विरले ही है। मैं आपकी ज्ञान चर्चा से सहमत हूँ।

उत्तर- आपने महिला उत्पीड़न की तरह ही पुरुष उत्पीड़न का कानून बनाने की मांग की, इससे मैं सहमत नहीं हूं। इस मांग से महिला और पुरुष के बीच वर्ग संघर्ष बढ़ सकता है। अच्छा यह होगा कि महिलाओं के लिए बनाए गए अलग-अलग कानून समाप्त कर दिए जाएं। परिवार को एक इकाई मान लिया जाए और परिवार में महिला पुरुष सभी एक साथ समान आधार पर रह सकते हैं। किसी को विशेष अधिकार न हो। अन्य अनेक विषयों पर आपने जो कुछ लिखा है उसमें मेरी सहमति है। आप ज्ञान चर्चा से भी सहमत है। अधिक अच्छा होगा कि आप प्रतिदिन होने वाली रात 8:00 बजे की ज्ञान चर्चा में समय निकालकर कभी सम्मिलित हो जिससे आपके विचारों का लाभ समाज को मिल सकें। आप लिखेंगे तो हम लिंक आपको भेज देंगे।

ज़ूम "चर्चा कार्यक्रम" से

1) आज दिनांक 20-02-2025 रात्रि कालीन जूमचर्चा में कोटेशन नंबर 4402 लिया गया जिसमें चर्चा का विषय रहा समाज में दो प्रतिशत के आसपास अपराधी होते हैं सरकार ने अनावश्यक कानून बनाकर इस संख्या को 99% तक कर दिया है वर्तमान समय में ऐसा कोई आदमी दिखाई नहीं देता जो अक्षरशः कानून का पालन करता हो भारत में विगत 70 वर्षों में चाहे जिस राजनीतिक संगठन की सरकार रही हो पर समाज विरोधी तत्वों का मनोबल लगातार बड़ा है और समाज का मनोबल लगातार कम हुआ है। कानून का उल्लंघन करने वाले हर क्षेत्र में सफल रहे हैं और कानून का पालन करने वाले असफल। इस चर्चा में बृजेश जी ने कहा कि हर अपराध गैर कानूनी होता ही होता है हर अनैतिक कार्य को भी गैरकानूनी बना देना गलत है। अगर अनावश्यक कानून को कम किया जाए तो समाज से काफी हद तक अपराध कम किया जा सकता है। पवनजय जी ने कहा सत्ता के लिए अपराध का बढ़ना या घटना महज राजनैतिक नफा नुकसान की कसरत भर है। श्रीकांत जी ने कहा अपराधी धार्मिक प्रवृत्ति के भी होते हैं, इसलिए यह कहना कि धार्मिक शिक्षा अपराध में कमी लाएगी गलत है।

आदरणीय मुनि जी ने कहा जैसे-जैसे धर्म का भय और समाज का भय कम होता गया वैसे-वैसे अपराधियों का मनोबल बढ़ता गया। तंत्र की जन कल्याणकारी अवधारणा और कानूनों का ढेर राज्य को अपराध नियंत्रण से रोक रहा है। व्यक्ति के मौलिक अधिकारों में हस्तक्षेप ही अपराध होता है। जबकी कानूनों का पालन ना करना गैरकानूनी और सामाजिक नियमों का पालन ना करना अनैतिक। अनैतिक कार्यों के लिए समाज व्यक्ति का बहिष्कार कर सकता है। तंत्र को उसमें किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। अपराध की गलत परिभाषा और लोक व्यवस्था को ना स्वीकारना शान्ति प्रिय लोगों के लिए संकट खड़ा कर रहा है। जबकी सरकारों का काम ही शरीफ और शान्ति प्रिय जनता की सुरक्षा का है।

2) आज दिनांक 21-2-2025 को सायंकालीन जूमचर्चा कार्यक्रम में विषय कोटेशन नंबर 2231 से लिया गया। जिसमें चर्चा का विषय रहा कि आज भारत मे समस्याएं पैदा नहीं हो रही, बल्कि योजना पूर्वक पैदा की जा रही है क्योंकि समाजवाद उनका लक्ष्य है। उनके समाजवाद का अर्थ है कि समाज की सभी समस्याओं का इस तरह समाधान करना कि उससे नई समस्या पैदा हो। भारतीय लोकतंत्र में तंत्र से जुड़े लोग किसी भी समस्या को सुलझने ही नहीं देते। वह हर

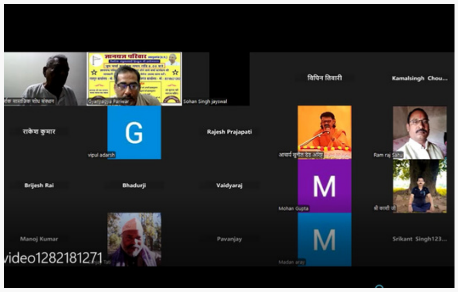

मामले में प्रश्न खड़ा कर देते हैं, जिससे समस्या यथावत बनी रहे अथवा उसके समाधान से ही कोई नई समस्या पैदा हो जाए। तंत्र से जुड़ी कोई भी इकाई न्याय और सुरक्षा के प्रति उतनी संवेदनशील नहीं जितनी जाति, धर्म, लिंग भेद के विस्तार में सक्रिय दिखती है। कुछ लोग ऐसे भी है कि वह समस्याओं को एक संकट का रूप देकर, समाज में आतंक पैदा करते हैं। ऐसे लोगों के पास समाधान नहीं होता, वह तो केवल समाज में भय और भ्रम पैदा करते हैं। स्वतंत्र भारत में समस्याओं का समाधान इस तरह से करने का प्रयास किया गया है कि 10 समस्याएं और खड़ी हो जाती है। राज्य का दायित्व नागरिकों की सुरक्षा का है। वैचारिक स्थिति आदमी की ऐसी होनी ही चाहिए कि जैसे स्थिति हो वैसी व्यवस्था होनी चाहिए। समस्या भी समाज का एक अंग है भाग है। इस समस्या का निदान सभी संगठन सभी समाज के लोग अपने-अपने तरीके से करने की कोशिश करते हैं। दो ही प्राकृतिक इकाई है 'व्यक्ति और समाज'। व्यक्ति कई प्रकार के होते हैं व्यक्ति का कोई भाग नहीं होता। समाज सबसे ऊपर की इकाई है। समाज का अर्थ है सर्व व्यक्ति समूह। दुनिया में जो भी शब्द अधिक मान्य होता है, उसकी नकल तैयार हो ही जाता है। आज समाजवाद का अर्थ बदल गया है, समाजवाद का वास्तविक अर्थ है 'समाज सर्वोच्च'। यह तो बाद में समाजवाद का अर्थ सरकारीकरण 'सत्ता के केन्द्रीयकरण' के रूप में कर दिया गया। वर्तमान का समाजवाद समाज को खोखला कर सत्ता को असीम शक्ति प्रदान करने का काम कर रहा है। आगे इस चर्चा में बृजेश जी, मोहन गुप्ता जी, श्रीकांत जी, वैद्यराज जी, पवनजय जी, माता प्रसाद कौरव जी आदि लगभग 20 लोगों ने अपने-अपने विचार रखे।

3) दिनांक 24 फरवरी 2025 के चर्चा कार्यक्रम में इस विषय पर चर्चा की गई थी कि आर्थिक,सामाजिक असमानता दूर करना मजबूतों का कर्तव्य होता है कमजोरों का अधिकार नहीं। आर्थिक, सामाजिक असमानता दूर करने की चर्चा तो होती है लेकिन अधिकारों की असमानता दूर करने की कोई चर्चा नहीं होती। समानता एक आकर्षक लेकिन भ्रामक अवधारणा है। यह समाज द्वारा गढ़ा गया एक विचार है, जो अक्सर सुविधा, न्याय और संतुलन की स्थापना के लिए उपयोग किया जाता है। लेकिन गहराई से देखें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी दो व्यक्ति वास्तव में समान नहीं होते। प्रकृति ने हर व्यक्ति को अनूठा बनाया है—शारीरिक रूप, मानसिक संरचना, सोचने का तरीका, अनुभव और परिस्थितियाँ, सब कुछ अलग-अलग होता है। यहां तक कि जुड़वाँ बच्चे भी, जो आनुवंशिक रूप से अत्यधिक मेल खाते हैं, उनके व्यक्तित्व और अनुभव अलग-अलग होते हैं। फिर भी, समाज एक काल्पनिक समानता की अपेक्षा करता है और उसे एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है। असमानता की कई परतें होती हैं, लेकिन सबसे घातक रूप अधिकारों की असमानता है। आर्थिक और सामाजिक असमानता महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, लेकिन जब अधिकारों में असमानता होती है, तो यह पूरे समाज की नींव को कमजोर कर देती है। अधिकार हर नागरिक का जन्मसिद्ध हक होते हैं, जबकि संपत्ति या सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित की जा सकती है। दुर्भाग्य से, समाज और शासन का ध्यान आर्थिक और सामाजिक असमानता को दूर करने पर तो रहता है, लेकिन अधिकारों की असमानता पर चर्चा तक नहीं होती। आज कमजोर तबके को यह विश्वास दिलाया जा रहा है कि आर्थिक और सामाजिक उत्थान उनका अधिकार है, जबकि यह सशक्त वर्ग का नैतिक कर्तव्य होना चाहिए। अधिकार कोई दया या अनुग्रह नहीं होते, न ही वे किसी की कृपा से मिलते हैं। स्वतंत्रता, समान अवसर और न्याय नागरिकों के अधिकार हैं और इनकी सुरक्षा शासन का प्राथमिक दायित्व है। परंतु जब शासन अपने मूल कर्तव्य से भटक जाता है, तो अधिकार केवल कुछ विशेष वर्गों तक सीमित रह जाते हैं और असमानता गहरी होती जाती है। यदि समाज को वास्तव में समावेशी और न्यायसंगत बनाना है, तो अधिकारों की समानता सुनिश्चित करनी होगी। आर्थिक संसाधन वितरित किए जा सकते हैं, सामाजिक ढांचे बदले जा सकते हैं, लेकिन जब तक हर व्यक्ति को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक असमानता बनी रहेगी। एक सशक्त समाज की पहचान यह नहीं होती कि उसमें कितने अमीर या गरीब हैं, बल्कि यह होती है कि उसमें सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा कितनी दृढ़ता से की जाती है।

गतांक से आगे....

~ जीवन पथ ~

मैने यह तथ्य कहा है कि आस्था और धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं होता है और न आस्था, धर्म के किसी लक्षण के रूप में परिलक्षित होती है? लेकिन मेरे कहने का यह आशय नहीं है कि जीवन में आस्था का कोई महत्व नहीं है। मूल तथ्य यह है कि धर्म की पुष्टी आस्था से नहीं तर्क से होती है।

क्या तुम मनु के दृष्टिकोण के अनुसार धर्म के लक्षणों को स्वीकार करते हो जिसमें उन्होने कहा है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचंमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

हाँ मैं इसे स्वीकार करता हूँ।

तो क्या तुम मनुवादी हो?

नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं है। मनु का दर्शन बहुत से स्थानों पर समाज का यथार्थप्रज्ञ मार्गदर्शन करता है। मुझे यथार्थपरकता को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है। किन्तु मैं समाज में जातियों की स्थापना के सन्दर्भ में मनु के विचारों से कोई मार्गदर्शन प्राप्त नहीं करता हूँ। कयोंकि मेरी नजर में जातीय व्यवस्था समाज के सार्वभौमिक स्वरूप को ध्वस्त करती है। मैं लेश-मात्र भी मनुवादी नहीं हूँ। क्योंकि किसी भी विषय पर किसी वस्तुस्थिति से सीख लेने से व्यक्ति उसका अनुयाई नहीं बन जाता बल्कि वह परिस्थिति का विश्लेषक सिद्ध होता है।

और धर्म से अलग होने पर क्या जीवन में आस्था की कोई भूमिका हो सकेगी? ....सिमी उससे पुनः प्रश्न करती है।

व्यक्ति के जीवन में आस्था की विशेष भूमिका होती है। लेकिन इसके स्वभाव का सबसे बडा दोष यह है कि यह व्यक्ति के मन में जिसके प्रति भी प्रकट होती है हम उस वस्तुस्थिति के चरित्र में गुण-दोष का विभाजन नहीं कर पातें हैं। वह वस्तुस्थिति किसी जातीय या साम्प्रदायिक संगठन की भी हो सकती है और किसी व्यक्ति या संस्था की भी। हम जिसके प्रति भी आस्थावान होते हैं, हमारा तमाम सामर्थ्य उसके दास के समान होता है। ....विचारणीय तथ्य यह भी है कि आस्था का केन्द्र आस्थावान की उर्जा का किस प्रकार प्रयोग करता है, उसका वैचारिक स्तर क्या है? (....वह विषय को विस्तार देते हुए कहता है-) प्रकृति ने हमे आपदाओं के विरूद्ध संगठित होकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। हमारे अन्तःकरण में इस गुण का विकास केवल प्रकृति के प्रति आस्थावान होकर ही हो सकता है। उद्देश्य स्पष्ट है, मूलतः आस्था से विश्वास उत्पन्न होता है। लेकिन आस्था के इस सिद्धान्त की कसौटी समाज होता है, व्यक्तिवाद नहीं। वैश्विक समाज के लिए भारतीय संस्कृति का वैदिक काल आस्था के इस दृष्टिकोण की अमूल्य धरोहर है। हम अन्वेषण करते हैं तो पाते हैं कि तब धर्म, व्यक्ति की जातीय एवं वंशानुगत पहचान का माध्यम नहीं था। यह व्यक्ति का मार्गदर्शक तो होता था जो उसके लौकिक चरित्र के निर्माण का आधार बनता था लेकिन समाज की आन्तरिक स्थिति में बनने वाले विभिन्न संगठनों से इसका कोई सरोकार नहीं होता था। कालान्तर में मानव स्वार्थ के अनुसार धर्म के इस मूल सिद्धान्त में विकृति आनी प्रारम्भ हुई। क्योंकि समाज के अधिसंख्य स्वघोषित स्वयंभू भगवानों ने पन्थ निर्धारण के नाम पर अनेक बार समाज का वर्गीकरण किया है। इस प्रकार बडी संख्या में लोगों की आस्था का गुण विभाजन होता रहा है और आधुनिक युग के आते-आते तो समाज के स्वघोषित भगवानों ने आस्था के वर्गीकरण से भी आगे बढ़कर इसके प्राकृत स्वरूप को ही बदल दिया है। अब आस्था मानवता के सार्वजनिक समन्वय का उपक्रम नहीं रही है बल्कि इसकी प्राकृतिक धारणा के विरूद्ध उलटे इसके नाम पर ही साम्प्रदायिक संगठनों का भी विभाजन करके उन्हें अत्यन्त संकीर्ण जातीय परिधियों में समेट दिया है। यथार्थ में समाज का निष्पक्ष निरीक्षण किया जाता है तो इसे समाज कहने का उद्देश्य ही पूरा नहीं होता है। क्योंकि अब व्यक्ति का चरित्र, धर्म से पोषण पाकर स्वयं को समाज के प्रति उत्तरदायी सिद्ध नहीं करता है बल्कि उन संगठनों, जातियों एवं पन्थों के स्वयंभू नायकों के प्रति उत्तरदायी हो गया है जिनकी निष्ठा समाज के प्रति न तो कभी रही है और न कभी हो सकेगी! ऐसे व्यक्तियों की ऐसी धारणाओं का उद्देश्य केवल आस्था का व्यापार करना है। यह कितनी निकृष्ट सोच है कि ऐसे लोगों ने समाज का भावनात्मक शोषण करके आस्था की निष्ठा को व्यक्ति पूजा एवं जातीय संगठनों के सुदृढीकरण का आधार बना दिया है। मेरे विचार से यह आस्था की दिशाहीन प्रक्रिया है और मैं इसके इस वर्गीकृत रूप का निष्ठापूर्वक विरोध करता हूँ। ....विवेक अपनी बात पूरी करता है तो इस बार प्रोफेसर श्रीवास्तव स्वयं बात आगे बढ़ाते हुए कहते हैं- हाँ! केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में लोगों ने आस्था की प्रकृति के विरूद्ध इसका वर्गीकरण करके निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए इसका बाजारीकरण किया हैं। मौजूदा दौर में कुछ धूर्त लोग आस्था का व्यापार कर रहे है। यह कितनी दुखद और आश्चर्य जनक स्थिति है कि जो लोग आस्था का मोल भाव करते हैं, हम उन्हीं को अपने मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार कर लेते हैं! परिणाम स्वरूप समाज में धर्म का दृष्टिकोण उतना ही दिशाहीन हो गया है। यह आज के पोंगा-पण्डितों की स्वयं को स्वयंभू कहने की पद्धति सर्वथा त्याज्य है। क्योंकि ऐसे लोगों के पाखण्ड ने ही आस्था की शक्ति को क्षीण कर दिया है और ये ऐसे सन्तुलनहीन सन्देश ही लोक शक्ति को निष्क्रिय कर रहे हैं। हमे आस्था के स्वरूप को तर्क संगत रूप से परिभाषित करके समाज से ऐसे स्वघोषित भगवानों का प्रभाव समाप्त कर देना चाहिए। क्योंकि अपने प्रभाव को सिद्ध करने के लिए ऐसे लोग नित नए पंथों की स्थापना करते रहते हैं। (....प्रोफेसर क्लास को बड़ी गम्भीरता से सम्बोधित करते हुए आगे कहते हैं-) आप लोग विचार कीजिए कि समाज में यह सब क्या हो रहा है, क्या दुनिया के लोगों के बीच सभ्यताओं के संघर्ष की वैचारिक आधारशिला यूँ ही तो नहीं रखी जाती है? क्योंकि मैं आप लोगों के सामने अपना यह विचार स्पष्ट करना चाहता हूँ कि दुनिया में सभ्यताओं के संघर्ष का कारण मनुष्य का आस्था की प्रकृति के विरूद्ध इसके प्रयोग करने की विधि में निहित है। दुनिया में कुछ स्वार्थी लोगों ने जिन्हें हम अपना आध्यात्मिक नायक कहते हैं, उन्होने मानवता के सार्वभौमिक दृष्टिकोण का कितना विभित्स खण्डन किया है कि आज हम रूढिवाद को त्यागकर किसी सार्वभौमिक सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं होते हैं।

मेरे विद्यार्थियों! समाज में इस विकृति के पनपने का कारण गुरूओं द्वारा उनकी मर्यादा का त्याग कर देना है। आज समाज में अधिष्ठित गुरू स्वयं को भगवान सिद्ध करने मे जुटे हुए हैं और उनके अनुयाई उनकी चाटुकारिता करने में ही स्वयं को धन्य समझते हैं। जबकि गुरू का अपनी मर्यादा की रक्षार्थ तथा शिष्य के मार्गदर्शन हेतु उसे यह संदेश होना चाहिए कि यदि उसका कोई शिष्य कभी संवेदनावश भावविभोर होकर भी गुरू को ईश्वर का दर्जा देनें का प्रयास करे तो भी उसे उसका मार्गदर्शन करना चाहिए कि वह (गुरू) प्रकृति का नायक नहीं है बल्कि शिष्य के लिए जीवन के रहस्यों एवं गूढताओं

की व्याख्या करने वाला प्रकृति द्वारा सृजित कारक मात्र है। मूलतः गुरू को स्वयं को कभी सृष्टि का सृजक सिद्ध करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए बल्कि उसे अन्य किसी विषय की तरह आस्था के विषय में भी केवल प्रकृति का विश्लेषक होना चाहिए ताकि शिष्य को मार्गदर्शन मिलता रहे। इसके विपरीत कोई गुरू यदि नीति के विरूद्ध आचरण करता है तो हमे ऐसे व्यक्ति की नीतियों का भी त्याग कर देना चाहिए, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का चरित्र निष्क्रिय हो चुका होता है। ऐसे में चाहे वह व्यक्ति मैं स्वयं ही क्यों न होऊँ! ....इतना कहकर प्रोफेसर अपनी बात समाप्त करते हैं तो सभी छात्र उनके प्रति कृतज्ञता जाहिर करते हैं। इस पर वह पुनः संदेश देते हैं- मुझे अपने प्रति अन्ध श्रद्धा रखने वाले शिष्य कभी नहीं चाहिए बल्कि मेरे द्वारा सिखाए गए विषयों का विश्लेषण करने वाले छात्र चाहिए! क्या मैं आप लोगों से ऐसी कोई अपेक्षा कर सकता हूँ?

जी हाँ सर! ......कक्ष में समवेत स्वर गूजता है। प्रोफेसर, अपने सन्देश का प्रत्युत्तर स्वीकार करते हैं। इसी बीच आदित्य, प्रोफेसर से आज्ञा लेकर विवेक से प्रश्न करता है- विवेक! समाज के ढाँचे में बनने वाले विभिन्न संगठनों के प्रति तुम्हारा क्या नजरिया है? क्योंकि तुम अक्सर कई सामाजिक संगठनों को औचित्यहीन सिद्ध करते हो?

वह प्रोफेसर से आज्ञापरक स्वीकृति लेकर आदित्य की शंका का निवारण करता है- मैं कभी-भी समाज के प्राकृतिक संगठन का विरोध नहीं करता हूँ बल्कि समाज के आन्तरिक ढाँचे में विभिन्न अवसरों पर बनाए जाने वाले संगठनों को औचित्यहीन मानता हूँ। क्योंकि कारण स्पष्ट है कि समाज सार्वभौमिक संगठन भाव से जीवन पाता है और व्यवस्थित रहता है न कि इसके ढाँचे में बनने वाले विभिन्न अवसरवादी संगठनों से इसे कोई वास्तविक लाभ मिलता है।

और तुम धर्म की क्या परिभाषा व्यक्त करोगे? .....इस बार सिमी उससे प्रश्न करती है। वह उत्तर देता है-

वह धारणा जो यथार्थ से समन्वय का मार्ग प्रषस्त करे, धर्म कहलाती है। यह तथ्य, धर्म की पहचान को स्पष्ट करता है।

वह उससे अन्य प्रश्न करती है- यूँ तो तुमने हमारे सामने धर्म का बहुत ही सन्तुलित पक्ष प्रस्तुत किया है। लेकिन मुझे तुम्हारे तर्क हिन्दू, इस्लाम तथा दुनिया के अन्य सभी धर्म को अस्तित्वहीन सिद्ध करते हुए महसूस होते हैं। इस बारे में तुम क्या कहोगे?

समाज के ढाँचे की स्थापित स्थिति के अनुसार तुम्हारा प्रश्न बहुत व्यापक विषय का निस्तारण चाहने वाला है! मैने भी इस विषय में धर्म का मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। माना कि युगो से ये शब्द समाज की घटकवादी व्यवस्था के अधिष्ठाता रहे हैं। मुझे इस तथ्य को स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन मैने अपने गुरू के मार्गदर्शन में जिस धर्म-दर्शन का साक्षात्कार किया है वह ही आप लोगों के सामने प्रस्तुत किया है। मैं धर्म के तर्क संगत लक्षणों को स्वीकार करते हुए स्वयं को इस मूल धारणा से आबद्ध करता हूँ कि सम्प्रदायवाद, पूजा पद्धति एवं व्यक्ति की पहचान निश्चित करने वाला कोई कार्य, धर्म का कोई रूप नहीं होता है। ऐसा होने का लोगों के पास कोई तर्क नहीं है और आज तक धर्म की विषय-वस्तु का विश्लेषण करने वाले किसी व्यक्ति ने ऐसे कारण को धर्म के किसी लक्षण के रूप में स्वीकार नहीं किया है।

लेकिन ऐसा होने पर हिन्दुत्व दुनिया से अपना परिचय किस प्रकार कराएगा और इस्लाम किस प्रकार? यह फ़लसफा दुनिया के सभी धर्मो के पहचान सम्बन्धी विषय पर लागू होता है। ऐसा होने पर तो हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई इत्यादि धर्म, अपने धर्म होने की मर्यादा ही सिद्ध नहीं कर पाएगें। फिर मानव जीवन को उत्कर्ष के शिखर तक ले जाने वाली इन महानतम सांस्कृतिक विरासतों को क्या नाम दिया जा सकेगा? क्या मानव समाज द्वारा इन विषयों को तजना मानवता का अपमान करने की तरह नही होगा, क्योंकि इनके ज्ञान गर्भ में आध्यात्म का मर्म भी है और विज्ञान के आवेश को सन्तुलित करके विकास का मार्ग प्रशस्त करने वाली संगठन शैली भी है। .....विवेक! क्या तुम्हारे पास इस विषय का कोई अन्य निष्कर्ष भी है? इस बार रियाज उससे प्रश्न करता है। वह उसके प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में अपना पक्ष प्रस्तुत करता है-

व्यक्तियों के समाज को विभिन्न साम्प्रदायिक समूहों में प्रवृत्त कर देने वाले हमारे लिए पूज्य ये शब्द, सामाजिक समरसता के कितने बड़े हिमायती हैं, अब हमे इस विषय का विश्लेषण कर लेना चाहिए! .....मैं रियाज द्वारा किए गए प्रश्न पर अपना पक्ष रखते हुए आप लोगों से यह प्रश्न करना चाहता हूँ कि जिन महिमामण्डित शब्दों को विश्व के जनमानस ने अलग-अलग धर्म के रूप में स्वीकार किया है, क्या इन सभी धर्मों के संस्थापकों ने अपनी-अपनी विचार धाराओं को इन कथित धर्मो का नाम दिया है या इनके प्रवर्तकों के विचारों को उनके अनुयाईयों ने अपने लिए जीवन दर्शन मानकर इन्हें धर्म के रूप में स्वीकार किया है। मैने, ऐसा इसलिए कहा है कि व्यक्ति के जीवन के पतन के बाद उसके द्वारा नए विचारों के उत्पन्न होने एवं स्थापित विचारों में परिस्थितिजन्य सुधार होने का प्राकृतिक स्रोत समाप्त हो जाता है। ऐसे विचारों को देशकाल परिस्थिति के अनुसार बिना विश्लेषित किए स्वीकार करना हमारे लिए उतना ही हानिकारक हो सकता है जितना कि किसी रोग के निदान के लिए दी गयी दवा को बिना उपयुक्त जानकारी के कम या ज्यादा मात्रा में रोगी द्वारा लेने पर उसे हानि हो सकती है। ऐसी गलती जीवन के पतन का कारण भी बन सकती है। हमे स्वतन्त्रता के मूल स्वभाव को समझते हुए इस सिद्धान्त को स्वीकार करना चाहिए कि नेतृत्व की सोच समाज की आधिकारिक दिशा-निर्देशक नहीं होती है जिससे लोग सदैव के लिए उसके आज्ञाकारी बने रहें बल्कि यह केवल सामयिक दृष्टिकोण होता है। जिसका विश्लेषण करना उसे जीवन पद्धति के रूप में स्वीकार करने वाले समाज का दायित्व होता है। .....इतना कहकर वह क्षण भर के लिए चुप होता है और पुनः आगे कहता है- जीवन गतिशीलता में निहित होता है इसलिए परिवर्तन प्रकृति का आधारभूत नियम है। रियाज, तुमने मुझसे प्रश्न किया है कि अपनी आस्था पद्धति और वैचारिक दृष्टिकोण को त्यागकर विश्व के ये सभी धर्म अपनी मर्यादाओं को कैसे तय कर सकेगें? इस प्रश्न पर यदि मैं यह प्रति प्रश्न करूँ कि जीवन की मूल स्वतन्त्रता का क्या आधार होना चाहिए तो क्या तुम मेरी इस प्रतिक्रिया में अपने प्रश्न का उत्तर नहीं खोज सकोगे?

तो क्या तुम्हारे अनुसार धर्म के ये विभिन्न रूप जीवन के विस्तार की प्राकृतिक स्वतन्त्रता को समाप्त करते हैं?